



5 'यूपी के दो लड़के' राजनीति को मोहब्बत की दुकान बनाएंगे 'खटाखट खटाखट' : राहुल

6 महिला सशक्तीकरण का माध्यम है योग

7 'फैशन के साथ चलना थकाऊ' हो सकता है : मंजरी मिश्रा



தக்ஷிண பாரதக் ராஷ்டிரமத் | தினமணி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बंगलूर से एक साथ प्रकाशित

फ़र्स्ट टेक

एयर इंडिया चुनिंदा घरेलू मार्गों पर प्रीमियम इकनॉमी श्रेणी शुरू करेगी

मुंबई/भाषा. एयर इंडिया अगले महीने से चुनिंदा घरेलू मार्गों पर प्रीमियम इकनॉमी श्रेणी शुरू करने जा रही है। यह श्रेणी उपलब्ध कराने वाली एयर इंडिया दूसरी भारतीय एयरलाइन कंपनी होगी। अभी तक सिर्फ विस्तारा ही घरेलू मार्गों पर प्रीमियम इकनॉमी यात्रा श्रेणी उपलब्ध कराती है। टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन ने बुधवार को कहा कि उसने दो नए ए320 नियोजित विमानों को तीन श्रेणियों में बांटा है। इनमें बिजनेस श्रेणी में आठ और प्रीमियम इकनॉमी में पैंर रखने के लिए अतिरिक्त जगह के साथ 24 सीटें हैं। इसमें 132 इकनॉमी श्रेणी की सीटें भी होंगी। यह पहली बार है जब एयरलाइन ने अपने छोटे आकार के विमान में प्रीमियम इकनॉमी केबिन पेश किया है।

द सिटी को-ऑपरेटिव बैंक का लाइसेंस रिजर्व बैंक ने रद्द किया

मुंबई/भाषा. भारतीय रिजर्व बैंक ने बुधवार को पर्याप्त पूंजी और कमाई की संभावनाओं के अभाव के कारण द सिटी को-ऑपरेटिव बैंक, महाराष्ट्र का लाइसेंस रद्द कर दिया। रिजर्व बैंक ने कहा कि महाराष्ट्र के सहकारिता आ्युक्त और सहकारी समितियों के पंजीयक को बैंक को बंद करने और एक परिसमापक नियुक्त करने का आदेश जारी करने के लिए कहा गया है। रिजर्व बैंक के अनुसार, सहकारी बैंक 19 जून, 2024 को कारोबारी समय की समाप्ति से बैंक परिचालन बंद कर देगा। परिसमापन पर, प्रत्येक जनाकर्ता जमा बीमा और ऋण गारंटी निगम (डीआईसीजीसी) से केवल पांच लाख रुपये की मॉड्रिक बीमा तक अपनी जमा राशि की जमा बीमा दावा राशि प्राप्त करने का हकदार होगा। रिजर्व बैंक ने कहा, "बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लगभग 87 प्रतिशत जनाकर्ता डीआईसीजीसी से अपनी जमा राशि की पूरी राशि प्राप्त करने के हकदार हैं।"

मीषण गर्मी, लू में कम से कम 550 हज यात्रियों की मौत

मन्ना/एजेन्सी. सऊदी अरब में हज यात्रा के दौरान रेगिस्तानी क्षेत्र में भीषण गर्मी और लू के कारण अब तक कम से कम 550 लोगों की मौत हो गई है। अरब राजनयिकों ने पुष्टि की कि गर्मी और लू में कम से कम 323 मिस्रवासी मुख्य रूप से गर्मी से संबंधित बीमारियों के कारण मारे गये। अल-मुआइसेम अस्पताल से प्राप्त कुल संख्या का हवाला देते हुए एक राजनयिक ने कहा, सभी मिस्रवासी गर्मी के कारण मर गए, भीड़ के कुचलने के दौरान एक व्यक्ति को घातक चोटें भी आईं।

Table with market data: 20-06-2024, 21-06-2024, BSE 77,337.59, NSE 23,521.60, सोना 7,387.00, चांदी 96,000.00

Table with gold and silver prices: सोना 7,387.00, चांदी 96,000.00

Advertisement for 'मिशन मंडेला' (Mission Mandela) by Dakshin Bharat.

Advertisement for 'सिस्टम बना उपकरण' (System Building Equipment) by Dakshin Bharat.

आधुनिक, अनुसंधान उन्मुख उच्च शिक्षा प्रणाली की दिशा में काम कर रही है सरकार : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन किया



दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com. राजगीर, (बिहार)/भाषा. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कहा कि केन्द्र सरकार आधुनिक, अनुसंधान उन्मुख उच्च शिक्षा प्रणाली की दिशा में काम कर रही है और उनका मिशन है कि भारत की पहचान फिर से दुनिया के सबसे प्रमुख ज्ञान केंद्र के रूप में बने। मोदी ने यहां नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए छात्रों से हमेशा जिज्ञासु और साहसी बने रहने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने प्राचीन नालंदा विहार के परिसर का भ्रमण करने और उसके अवशेषों का अवलोकन करने के बाद नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा, "नालंदा उस सत्य का उद्घोष है कि आग की लपटों में पुरतक भले जल जाएं, लेकिन आग की लपटें ज्ञान को नहीं मिटा सकती। नालंदा के विध्वंस ने भारत को अंधकार से भर दिया था। अब इसकी पुनर्स्थापना, भारत के स्वर्णिम युग की शुरुआत करने जा रही है।" उन्होंने कहा, "जब शिक्षा का विकास होता है तो अर्थव्यवस्था और संस्कृति की जड़ें भी मजबूत होती हैं। हम विकसित देशों को देखें तो पाएंगे कि वे अर्थ, सांस्कृतिक लीडर तब बने जब एजुकेशनल लीडर हुए।" मोदी ने कहा, "आज दुनिया भर के छात्र उन देशों में जाकर पढ़ना चाहते हैं। कभी ऐसी स्थिति हमारे यहां नालंदा और विक्रमशिला जैसे स्थानों में हुआ करती थी। इसलिए यह केवल सहयोग नहीं है कि जब भारत शिक्षा में आगे था तब उसकी आर्थिक सामर्थ्य भी नई ऊंचाई पर था।" प्रधानमंत्री ने कहा कि यह किसी भी राज्य के विकास के लिए बुनियादी 'रोड मैप' है, इसलिए 2047 तक विकसित होने के लक्ष्य पर काम कर रहा भारत, शिक्षा के क्षेत्र का कायाकल्प कर रहा है। उन्होंने कहा, "मेरा मिशन है कि भारत दुनिया के लिए शिक्षा और ज्ञान का केंद्र बने। इसके लिए भारत आज बहुत कम उम्र से ही अपने छात्रों को नई खोज की भावना से जोड़ रहा है। आज एक तरफ एक करोड़ से ज्यादा बच्चों को अटल टिकरिंग लैब में आधुनिक प्रौद्योगिकी का लाभ मिल रहा है वहीं दूसरी ओर चंद्रयान और गगनयान जैसे मिशन छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ा रहे हैं।" प्रधानमंत्री ने कहा कि नई खोज को बढ़ावा देने के लिए भारत ने एक दशक पहले 'स्टार्टअप इंडिया' मिशन की शुरुआत की थी और देश में एक समय कुछ ही स्टार्टअप थे, लेकिन आज भारत में 1,30,000 से ज्यादा स्टार्टअप हैं। उन्होंने कहा कि पहले की तुलना में आज भारत से रिकॉर्ड संख्या में पेटेंट फाइल किए जा रहे हैं और शोध पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। उन्होंने कहा, "हमारा जोर अपने युवा खोजकर्ताओं को शोध के लिए ज्यादा से ज्यादा मौके देने का है।"



जम्मू-कश्मीर के बारामूला मुठभेड़ में दो आतंकवादी ढेर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com. शुरु किया। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों द्वारा सुरक्षा बलों पर गोलीबारी करने के बाद तलाशी अभियान मुठभेड़ में बदल गया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि मुठभेड़ स्थल पर दो शय देखे गए हैं, लेकिन अभी तक उन्हें बरामद नहीं किया जा सका है। मारे गए उग्रवादियों की पहचान और संघटन का पता लगाना जा रहा है। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों के साथ गोलीबारी में दो सुरक्षाकर्मी - एक पुलिसकर्मी की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद घेराबंदी और तलाशी अभियान

इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक ने विदेशों से भारत में धनप्रेषण सेवा शुरू की

नई दिल्ली/भाषा. इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (आईपीपीबी) ने यूरोप के रिया मनी ट्रांसफर के साथ साझेदारी में विदेशों से भारत में धनप्रेषण शुरू कर दिया है। आईपीपीबी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। आईपीपीबी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीओओ) आर विश्वेश्वरन ने कहा कि विदेश से धन पाने वाले व्यक्ति को खते में राशि आने पर कोई शुल्क नहीं देना होगा और केवल प्रेषक को ही रिया मनी को धनप्रेषण शुल्क देना होगा। विश्वेश्वरन ने कहा, "हमारा उद्देश्य बैंकिंग सेवाओं से वंचित और कम बैंकिंग सेवाओं के दायरे में शामिल लोगों की अड़चनों को दूर करना है। हम अब रिया मनी ट्रांसफर के साथ साझेदारी में 25,000 स्थानों पर अंतरराष्ट्रीय धनप्रेषण सेवा शुरू कर रहे हैं। इसे धीरे-धीरे बढ़ाकर 1.65 लाख से अधिक स्थानों वाले हमारे समूचे नेटवर्क को शामिल कर लिया जाएगा।" डाक विभाग के तहत संचालित भुगतान बैंक आईपीपीबी के शीर्ष अधिकारी ने कहा कि इस सेवा के माध्यम से धन पाने वालों के पास अपनी पसंद के आधार पर पूरा धन या आंशिक राशि निकालने का विकल्प होगा। विश्वेश्वरन ने कहा, "विदेश से धन पाने वालों के पास अपने आईपीपीबी खाते में धन भेजने का विकल्प भी होगा।"

यूजीसी-नेट परीक्षा रद्द करने का शिक्षा मंत्रालय ने आदेश दिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com. नई दिल्ली/भाषा. शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित यूजीसी-नेट परीक्षा रद्द करने का बुधवार को आदेश दिया और मामले को गहन जांच के लिए केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को सौंपा गया है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यूजीसी-नेट परीक्षा से इसलिए रद्द की गई कि ऐसी जानकारी मिली थी कि परीक्षा की शुचिता से समझौता किया गया है। मंत्रालय का यह फैसला, मेडिकल प्रवेश परीक्षा 'नीट' (राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा) में कथित अनियमितताओं को लेकर उपजे बड़े विवाद के बीच आया है और यह मुद्दा अब उच्चतम न्यायालय में है। परंपरा से हटकर, इस बार राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) एक ही दिन (18 जून) में "पेन और पेपर मोड" में आयोजित की गई, जिसमें 11 लाख छात्रों ने परीक्षा के लिए पंजीकरण कराया था। शिक्षा मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि फिर से यह परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसके लिए नई तिथि की घोषणा की जाएगी। यूजीसी-नेट परीक्षा के माध्यम से भारतीयों को जूनियर रिसर्च फेलोशिप, सहायक प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति और देश के विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में पीएचडी में प्रवेश के लिए पात्रता निर्धारित की जाती है।

मानसून के थम जाने से जून में बारिश औसत से 20 प्रतिशत कम : आईएमडी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com. नई दिल्ली/भाषा. भारत में एक जून से मानसून अंधाधी की शुरुआत के बाद से 20 प्रतिशत कम बारिश हुई है और पूरे महीने भी कुल वर्षा औसत से कम होगी। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने यह जानकारी दी। सामान्य से दो दिन पहले मुख्य भूमि पर पहुंचने और कई अन्य राज्यों में तेजी से आगे बढ़ने के बाद, 12 से 18 जून के बीच मानसून में कोई खास प्रगति नहीं हुई जिससे उत्तर भारत में बारिश के लिए प्रतीक्षा अवधि बढ़ गई। उत्तर भारत का एक बड़ा हिस्सा भीषण गर्मी से जूझ रहा है। मौसम विभाग ने बताया कि अगले तीन से चार दिन में महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, ओडिशा, आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों, उत्तर-पश्चिमी बंगाल की खाड़ी, बिहार और झारखंड के कुछ हिस्सों में मानसून आने की स्थिति बन रही है। मौसम विभाग के अनुसार भारत में एक से 18 जून के बीच 64.5 मिमी बारिश हुई, जो इस दौरान 80.6 मिमी के औसत (एलपीए) से 20 प्रतिशत कम है। उसने बताया कि एक जून से अब तक उत्तर-पश्चिम भारत में 10.2 मिमी बारिश (सामान्य से 70 प्रतिशत कम), मध्य भारत में 50.5 मिमी (सामान्य से 31 प्रतिशत कम), दक्षिण प्रायद्वीप में 106.6 मिमी (सामान्य से 16 प्रतिशत अधिक) तथा पूर्व एवं उत्तर-पूर्व भारत में 146.7 मिमी (सामान्य से 15 प्रतिशत कम) बारिश हुई। दक्षिण-पश्चिम मानसून 19 मई को निकोबार द्वीप समूह के कुछ हिस्सों में पहुंच गया था। इसके बाद 26 मई को चक्रवात रेमल के साथ ही मानसून दक्षिण के अधिकांश हिस्सों और बंगाल की खाड़ी के मध्य तक पहुंचा था।

सरकार ने धान समेत 14 फसलों का एमएसपी बढ़ाया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com. नई दिल्ली/एजेन्सी. केंद्र सरकार ने खरीफ सीजन 2024-25 के लिए धान, बाजरा, मक्का, तिल और कपास समेत 14 फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) बढ़ाने की घोषणा की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को यहां केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में धान, ज्वार, बाजरा, रागी, मक्का, अरहर, मूंग, उड़द, मूंगफली, सूरजमुखी, सोयाबीन, तिल काला तिल और कपास का समर्थन मूल्य बढ़ाने की प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। बैठक के बाद सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि सरकार के इस फैसले से किसानों के पास दो लाख करोड़ रुपए जाएंगे। उन्होंने बताया कि किसानों ने किसानों को उनकी उपज के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के लिए विपणन सत्र 2024-25 के लिए खरीफ फसलों के एमएसपी में वृद्धि की है। पिछले वर्ष की तुलना में एमएसपी में सबसे अधिक वृद्धि तिलहन और दलहन के लिए की गई है। काला तिल के एमएसपी 983 रुपये प्रति क्विंटल, तिल में 632 रुपये प्रति क्विंटल और अरहर में 550 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी की गई है। नई घोषणा के अनुसार खरीफ सीजन 2024-25 में धान के लिए एमएसपी 117 रुपए बढ़ाकर 2300 रुपए प्रति क्विंटल कर दिया गया है। ग्रेड ए के लिए यह 2320 रुपए प्रति क्विंटल होगा। ज्वार - संकर का एमएसपी 191 रुपए बढ़ाकर 3571 रुपए प्रति क्विंटल किया गया है।

रूस और उत्तर कोरिया ने किए समझौते पर हस्ताक्षर, दोनों देश आक्रमण होने पर एक दूसरे की करेंगे मदद

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com. सियोल, 19 जून (एपी) रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन ने बुधवार को एक शिखर वार्ता के दौरान एक नए समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें दोनों में से किसी भी देश पर हमला होने पर पारस्परिक मदद को लेकर प्रतिबद्धता जताई गई है। यह शिखर वार्ता ऐसे समय हुई है, जब दोनों देश पश्चिम के साथ बढ़ते गतिरोध का सामना कर रहे हैं। नेताओं ने कहा कि यह समझौता सुरक्षा, व्यापार, निवेश और सांस्कृतिक तथा मानवीय संबंधों जैसे क्षेत्रों से जुड़ा है, तथा यह 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद से मॉस्को और प्योंगयांग के बीच सबसे मजबूत कदम साबित हो सकता है। दोनों नेताओं ने इसे द्विपक्षीय संबंधों में एक बड़ा सुधार बताया। चौबीस साल में पुतिन के पहले उत्तर कोरिया दौर के दौरान दोनों की मुलाकात हुई। पुतिन की यह यात्रा हथियारों की उस व्यवस्था को लेकर बढ़ती पश्चिमी देशों में बढ़ती चिंताओं के बीच हो रही है जिसके तहत उत्तर कोरिया यूक्रेन से युद्ध के हथियार मुहैया करा रहा है और बदले में आर्थिक सहायता और प्रौद्योगिकी हासिल कर रहा है। दोनों देशों के बीच इस कयाद को आर्थिक तथा सैन्य सहयोग बढ़ाने तथा अमेरिका के खिलाफ संयुक्त मोर्चा तैयार करने के तौर पर देखा जा रहा है। रूसी सरकारी मीडिया के अनुसार हस्ताक्षर समारोह के बाद पुतिन ने कहा कि किम के साथ बातचीत में सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर काफी चर्चा हुई। पुतिन के हवाले से कहा गया है कि समझौते के तहत रूस उत्तर कोरिया के साथ सैन्य-तकनीकी सहयोग विकसित करने से पीछे नहीं हटेगा। मीडिया ने कहा कि पुतिन और किम के बीच बैठक करीब दो घंटे तक जारी रही जबकि प्रारंभ में बैठक का वक्त एक घंटे निर्धारित किया गया था। उत्तर कोरियाई नेता के साथ अपनी वार्ता की शुरुआत में पुतिन ने कहा कि रूस और उत्तर कोरिया आर्थिक तथा सैन्य सहयोग बढ़ाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे क्योंकि वे "रूसी संघ के विरुद्ध अमेरिका और उसके उपग्रहों की साम्राज्यवादी आधिपत्यवादी नीतियों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं।"

जेल में बंद कट्टरपंथी उपदेशक अमृतपाल सिंह की हिरासत एक वर्ष के लिए बढ़ाई गई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com. नई दिल्ली/भाषा। असम की डिब्रूगढ़ जेल में बंद कट्टरपंथी सिख उपदेशक और खड्क साहिब सीट से नवनिर्वाचित सांसद अमृतपाल सिंह की हिरासत एक साल के लिए बढ़ा दी गई है। पंजाब सरकार के गृह मामलों और न्याय विभाग ने लोकसभा चुनाव के नतीजे आने से एक दिन पहले तीन जून को विस्तार का आदेश दिया था। आदेश का विवरण बुधवार को मीडिया को बताया गया। "वारिस पंजाब दे" संगठन का प्रमुख अमृतपाल फिलहाल राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत अपने नौ सहयोगियों के साथ असम की जेल में बंद है। निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ते हुए, अमृतपाल ने खड्क साहिब निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा चुनाव जीता। अमृतपाल ने निम्नतम प्रतिद्वंद्वी और कांग्रेस उम्मीदवार कुलबीर सिंह जीरा को 1,97,120 मतां से हराया।

मालदीव में भारतीय पर्यटकों की संख्या 2.5 फीसदी घटी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com. मालदीव का दौरा करने वाले भारतीय पर्यटकों की संख्या में इस वर्ष जून में 2.5 प्रतिशत की गिरावट आई है। पर्यटन मंत्रालय की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार जून में अब तक समुद्र तट वाले देश में 44,013 से अधिक पर्यटक आ चुके हैं। रिपोर्ट ने कहा गया है कि एक जून से 12 जून के बीच वेलाना अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (वीआईए) पर कुल 44,013 पर्यटकों का स्वागत किया गया। इस वर्ष की शुरुआत में पिछले वर्ष के 8,54,405 से 9.6 प्रतिशत की वृद्धि और 2022 के 7,47,183 से उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। आंकड़ों से पता चलता है कि जून में हर दिन औसतन लगभग 3,668 पर्यटक आ रहे हैं और पर्यटक सात दिनों तक मालदीव में रह रहे हैं।



एस्टर अस्पताल ने एक मरीज पर दो सफल हृदय प्रत्यारोपण सर्जरी कर रचा इतिहास

■ विवाह से पहले और बाद में हृदय प्रत्यारोपण का एक दुर्लभ मामला
■ कर्नाटक में पहली और भारत में दूसरी बार हुई यह दुर्लभ सर्जरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com

बेंगलूर। प्रभु की रचना के आगे हम सभी नतमस्तक हैं, परन्तु विज्ञान व एडवांसड चिकित्सा की इस दुनिया में एक बार हृदय प्रत्यारोपण कर व्यक्ति के हृदय को तो बदला जा सकता है परन्तु एक बार हृदय प्रत्यारोपण के बाद पुनः उस हृदय को निकालकर नए हृदय का सफल प्रत्यारोपण (दूसरी बार) करना अपने आप में एक दैवीय चमत्कार से कम नहीं है पर ऐसा ही चमत्कार शहर के अग्रणी अस्पताल एस्टर आरवी के विशेष हृदय रोग विशेषज्ञों की टीम ने कर दिखाया। एस्टर आरवी की डाक्टरों की टीम ने 32 वर्षीय इंजीनियर की छाती में दो बार हृदय प्रत्यारोपण कर उन्हें स्वस्थ कर एक नया किर्तिमान स्थापित किया है। इस तरह की जटिल दो बार हृदय प्रत्यारोपण कर्नाटक में पहला व भारत में दूसरा अवसर है।

एक पत्रकार वार्ता में एस्टर आरवी अस्पताल के डाक्टरों की

हरियाणा विस चुनाव से पहले भाजपा में शामिल हुई पूर्व कांग्रेस नेता किरण चौधरी, बेटी श्रुति चौधरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस से इस्तीफा देने के अगले ही दिन हरियाणा की वरिष्ठ नेता किरण चौधरी और उनकी बेटी श्रुति चौधरी ने बुधवार को अपने तमाम समर्थकों के साथ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का दामन थाम लिया। राज्य में इस साल अक्टूबर में होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर इसे भाजपा के लिए बड़ी सफलता माना जा रहा है।

यहां पार्टी मुख्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन में हरियाणा के मुख्यमंत्री नारायण सिंह सैनी, पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खड्ग और राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुधर की मौजूदगी में दोनों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

भाजपा में शामिल होने के बाद किरण चौधरी ने संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा, "अब मैं भी भगवा रंग में रंग गई हूँ। लेकिन यही रंग चौधरी बंसीलाल का भी रंग था।" बड़ी संख्या में भाजपा मुख्यालय पहुंचे अपने समर्थकों को संदेश देते हुए उन्होंने कहा, "हमने 20 साल पहले हरियाणा विकास पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दिया था। आज मैं आपसे आह्वान करती हूँ कि आप कांग्रेस का झंडा छोड़कर भाजपा का झंडा उठा लें और हरियाणा विधानसभा चुनाव में लगातार तीसरी बार भाजपा की शानदार जीत सुनिश्चित करने के लिए आगे बढ़ते रहें।" उन्होंने कहा, "आज से, हमारा काम शुरू होता है। चौधरी बंसीलाल का नाम लीजिए और भाजपा की नीतियों पर काम करना शुरू कीजिए, भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की जय-जयकार करते हुए हरियाणा के कोने-कोने का दौरा कीजिए। यही चौधरी बंसीलाल और चौधरी सुरेंद्र सिंह को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।"

हरियाणा में कांग्रेस को झटका देते हुए चौधरी और उनकी बेटी ने मंगलवार को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। श्रुति चौधरी कांग्रेस की हरियाणा

अलग-अलग त्यागपत्र भेजे, जिसमें उन्होंने हुड़ा पर निशाना साधा। बताया जाता है कि किरण चौधरी हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव में भिवानी-महेन्द्रगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से श्रुति चौधरी को टिकट नहीं दिए जाने के साथ साथ राज्य में पार्टी द्वारा टिकटों के समग्र वितरण को लेकर नाराज थीं। पार्टी ने भिवानी-महेन्द्रगढ़ सीट से मौजूदा विधायक और हुड़ा के वकादार राव दान सिंह को टिकट दिया था, जो भाजपा के मौजूदा सांसद धर्मवीर सिंह से हार गए। इस सीट से श्रुति पूर्व में सांसद रह चुकी हैं। किरण चौधरी ने कहा कि वह भाजपा में इसलिए शामिल हुई क्योंकि वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के काम से बेहद प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि देश के लोगों ने उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में लगातार तीसरी बार जनादेश दिया है।



शरद पवार को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद राज्य की सत्ता में वापसी का भरोसा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com

पुणे/भाषा। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने बुधवार को विश्वास जताया कि इस साल होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद उनकी पार्टी राज्य की सत्ता में लौटेगी। पवार ने कहा कि उनकी पार्टी सत्ता में आई तो राज्य के किसानों को मुद्दों का समाधान करेगी।

राकांपा (एसपी) के नेता ने पुणे जिले की बारामती तहसील में नीरा वगाज गांव में किसानों से बातचीत के दौरान यह बात कही। पवार ने कहा, "केंद्र और राज्य, दोनों ही जगह हमारी सरकार नहीं है। लेकिन राज्य में चुनाव होने वाले हैं। हमने देखा है कि लोकसभा चुनाव में कैसा प्रदर्शन रहा है। यदि राज्य विधानसभा चुनावों में इसी तरह का काम हुआ तो मुझे कोई वजह नजर नहीं आती कि राज्य सरकार की कमान हमारे हाथ में नहीं आएगी।" उन्होंने कहा कि अगर उनकी पार्टी राज्य में सरकार बनाएगी तो किसानों के सभी मुद्दों का समाधान किया जा सकता है।

कांग्रेस, उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) और शरद पवार के नेतृत्व वाली राकांपा (एसपी) के गठबंधन महा विकास आघाड़ी (एमवीए) ने लोकसभा चुनावों में महाराष्ट्र में 48 में से 30 संसदीय सीटों पर जीत दर्ज की। राज्य की सत्ता में काबिज महायुति में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और उपमुख्यमंत्री अजीत पवार के नेतृत्व वाली राकांपा शामिल हैं। महायुति ने लोकसभा चुनावों में 17 सीटें जीतीं, जबकि एक सीट निर्दलीय उम्मीदवार के खाते में गई। कांग्रेस ने 13 सीटों पर जीत हासिल की, शिवसेना (यूबीटी) नौ और राकांपा (शरदचंद्र पवार) ने आठ सीटें जीतीं।

अडाणी समूह के चार बंदरगाह विद्युत बैंक के प्रदर्शन सूचकांक में शामिल

नई दिल्ली/भाषा। अडाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन लि. (एपीएसईजेड) के तहत संचालित चार बंदरगाहों को 'कंटेनर बंदरगाह प्रदर्शन सूचकांक 2023' में जगह दी गई है। विश्व बैंक और एसएंडपी ग्लोबल मार्केट इंटेलिजेंस द्वारा विकसित सूचकांक उत्पादकता, दक्षता और विश्वसनीयता जैसे मापदंडों पर बंदरगाहों के प्रदर्शन का आकलन करता है। अडाणी समूह की कंपनी ने बयान में कहा, मुंद्रा बंदरगाह को इसमें 27वीं रैंकिंग दी जबकि कडपल्ली 57वें, हजौरा 68वें और कृष्णपट्टनम बंदरगाह 71वें स्थान पर आया। भारत के कुल नौ बंदरगाह शीर्ष 100 बंदरगाहों की सूची में शामिल हुए हैं। इनमें अडाणी समूह के संचालन वाले चार बंदरगाह भी शामिल हैं। एपीएसईजेड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी और पूर्णकालिक निदेशक अश्विनी गुप्ता ने कहा, हमारे चार बंदरगाहों को विश्व बैंक के कंटेनर बंदरगाह प्रदर्शन सूचकांक 2023 में मान्यता मिलने पर हमें गर्व है।



राष्ट्रहित, धर्म की रक्षा, समाज की एकता के लिए काम करूंगा : बंदी संजय कुमार

हैदराबाद/भाषा। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री बंदी संजय कुमार ने बुधवार को कहा कि वह राष्ट्र हित, धर्म की रक्षा और समाज की एकता के लिए काम करेगा तथा तेलंगाना में अपने निर्वाचन क्षेत्र के विकास के लिए निधि लाने का प्रयास करेगा। केंद्रीय मंत्री का पदभार ग्रहण करने के बाद, तेलंगाना के करीमनगर में पहली बार पहुंचे कुमार ने संवाददाताओं से कहा कि बतौर मंत्री उनकी पदोन्नति का श्रेय पार्टी कार्यकर्ताओं और उनके कठिन परिश्रम को जाता है। कुमार ने कहा कि यह भाजपा में ही संघर्ष है कि उनके जैसा व्यक्ति करीमनगर में एक पार्षद से केंद्रीय मंत्री के पद तक पहुंच जाता है। करीमनगर पहुंचने पर पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने उनका शानदार स्वागत किया एवं उनपर फूल बरसाये। कुमार ने याद किया कि जब वह तेलंगाना की पिछली बार राष्ट्र समिति सरकार के दौरान प्रदेश भाजपा अध्यक्ष थे तब पार्टी कार्यकर्ताओं ने पुलिस की लाठियों खेड़ीं, उनके खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किये गये, उन्हें नजरबंद किया गया।

खाद्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने एफसीआई का औद्योगिक दौरा किया

नई दिल्ली/भाषा। खाद्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने बुधवार को भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के मुख्यालय का औद्योगिक दौरा किया और अधिकारियों से खाद्य सुरक्षा को प्राथमिकता देने और सख्ती से काम करने का आग्रह किया। एक सरकारी बयान में यह जानकारी दी गयी है। खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा के साथ जोशी ने देश की खाद्य वितरण प्रणाली की दक्षता में सुधार के लिए एफसीआई के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की। इसमें कहा गया है कि कार्यभार संभालने के बाद एफसीआई के अपने पहले दौर के दौरान जोशी ने "दक्षता बढ़ाने तथा लागत कम करने के अलावा सख्ती से काम को कम करने की आवश्यकता बतायी।"

एफसीआई कार्यालय भवन का दौरा करते हुए मंत्री ने बुनियादी ढांचे में सुधार का सुझाव दिया। एफसीआई के अध्यक्ष और अन्य शीर्ष अधिकारियों के साथ बैठक में जोशी को एजेंसी के संचालन, उपलब्धियों और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रमुख पहलों पर एक प्रस्तुति दी गई।

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने सिकल सेल एनीमिया के उन्मूलन के लिए चौरफा प्रयास करने का आह्वान किया

शुरुआत की है।" धनखड़ ने कहा, "हवन (प्रयास) शुरू हो चुका है और सभी को इसमें आहुति देनी है।" सिकल-सेल एनीमिया हीमोग्लोबिन एस नामक एक दोषपूर्ण जीन के कारण होता है, जिसके कारण लचीली लाल रक्त कोशिकाएं कठोर सिकल के आकार की कोशिकाएं बन जाती हैं, जिससे रक्त प्रवाह बाधित होता है और अंग क्षति का खतरा बढ़ जाता है। उपराष्ट्रपति ने कहा, "राष्ट्रीयता की मैराथन यात्रा चल रही है और हर कोई साथ है। कोई भी भारत के विकास को रोक नहीं पाएगा लेकिन यह तभी पूरा होगा जब 2047 तक देश से सिकल सेल रोग का उन्मूलन हो जाएगा और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।"

उन्होंने यह भी कहा कि यह सभी के लिए गर्व की बात है कि पहली बार एक आदिवासी महिला, द्रोपदी मुर्मू देश की राष्ट्रपति बनीं और उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को शपथ दिलाई।

दिल्ली हवाईअड्डा: बाल-दाही रंगकर बुजुर्गों के तौर पर यात्रा करने की कोशिश करने वाला युवक पकड़ा

नई दिल्ली/भाषा। केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बुधवार को बताया कि दिल्ली अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 24 वर्षीय युवक को पकड़ा गया है जो कथित तौर पर बुजुर्गों का हुलिया बनाकर कनाडा जा रहा था। उन्होंने बताया कि बाल और दाढ़ी रंगकर पहुंचे यात्री गुरु सेवक सिंह को मंगलवार शाम इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईआईआई) हवाई अड्डे के टर्मिनल-3 पर रोकता गया और उसे दिल्ली पुलिस को सौंप दिया गया। अधिकारी के अनुसार संदिग्ध गतिविधियों के चलते सीआईएसएफ कर्मियों ने पहले उस व्यक्ति की जांच की। उसने पहचान पत्र के तौर पर पासपोर्ट को प्रस्तुत करते हुए खुद को 67 वर्षीय शक्तिंदर सिंह सहोता बताया। अधिकारी ने बताया कि उसे मंगलवार को दिल्ली से उड़ान भरने वाले एयर कनाडा के विमान में सवार होना था।

एसी की अमृतपूर्व मांग के कारण कंपनियों को विदेशों से मंगवाने पड़ रहे हैं कलपुर्ज

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भारत में इस साल भारी गर्मी के कारण एयर-कंडीशनर (एसी) की बिक्री रिकार्ड स्तर पर पहुंच चुकी है। ऐसे में एसी विनिर्माता कंपनियों, फ्रॉस प्लो पंप/मोटर और पीसीबी सर्किट जैसे कलपुर्ज विदेशों से हवाई मार्ग से मंगा रहे हैं, जिससे देश के अधिकांश हिस्सों में जारी भीषण गर्मी के कारण मांग में आई तेजी को पूरा किया जा सके। उद्योग जगत से जुड़े दिग्गजों ने यह बात कही है। कंपनियों अपनी उत्पादन और आपूर्ति शृंखला को बरकरार रखने के लिए चीन, ताइवान, थाईलैंड, मलेशिया और जापान जैसे देशों के वैश्विक आपूर्तिकर्ताओं से कलपुर्ज को आपातकालीन स्थिति में हवाई मार्ग से मंगा रहे हैं, क्योंकि पारंपरिक समुद्री मार्ग से आपूर्ति में अधिक समय लगता है। कुछ कंपनियों ने तांबे और एल्यूमीनियम जैसे धातुओं की कीमतों में चार-पांच प्रतिशत तक की वृद्धि की है, जिससे कीमतों में वृद्धि का बोझ ग्राहकों पर पड़ रहा है। कुछ कंपनियों ने कहा कि इसके अलावा, कई स्थानों पर एसी लगाने में एक सप्ताह या उससे अधिक समय लग रहा है क्योंकि मौजूदा सेवा अनुबंधों को संभालने में असमर्थ हैं। डाइविन एयरकंडिशनिंग इंडिया के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक (सीएमडी) कंचनजीत जावा ने कहा कि पिछले तीन महीनों में घरेलू एसी उद्योग में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है, जो उम्मीद से कहीं अधिक है। उन्होंने कहा, कुछ कंपनियों में कुछ कलपुर्जों की कमी थी और उन्हें हवाई मार्ग से भेजा गया होगा, लेकिन उद्योग निश्चित रूप से बहुत ही उस्ताहपूर्ण स्थिति में है। एसी कंपनियों ने कहा कि उद्योग के पास यहां उस तरह का कलपुर्जों का सहयोग नहीं है क्योंकि भारत में अब भी उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के तहत एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाया जा रहा है।

आलू के चिप्स के पैकेट में मृत मेंढक मिला, जांच के आदेश

जामनगर (गुजरात)/भाषा। आलू के चिप्स (पोटेटो वेफर्स) के एक पैकेट में कथित तौर पर मृत मेंढक पाए जाने के बाद बुधवार को जामनगर नगर निगम ने जांच के आदेश दे दिए हैं। मुंबई के एक निवासी द्वारा ऑनलाइन ऑर्डर की गई आइसक्रीम में मानव उंगली का टुकड़ा मिलने के दावे के कुछ दिनों बाद यह शिकायत आई है। जामनगर नगर निगम के एक अधिकारी ने बताया कि जांच के तहत आलू के चिप्स के पैकेट के उत्पादन बैच के नमूने एकत्र किए जाएंगे। खाद्य सुरक्षा अधिकारी डी बी परमान ने संवाददाताओं से बताया, जैस्मीन पटेल नाम की एक युवती ने हमें सूचना दी कि बालाजी वेफर्स द्वारा निर्मित क्रेकव्स के एक पैकेट में एक मृत मेंढक मिला है। हम कल रात उस दुकान पर गए, जहां से इसे खरीदा गया था। प्रारंभिक जांच से पता चला कि वास्तव में यह एक मरा हुआ मेंढक था, जो सड़ी हुई अवस्था में था।

नीट विवाद : आप ने शिक्षा मंत्रालय को बर्खास्त करने की मांग की

नई दिल्ली/भाषा। आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सदस्य संदीप जगत ने बुधवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर पेपर लीक को संस्थागत रूप देने का आरोप लगाया और नीट में अनियमितताओं को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग की। पाठक ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा में भ्रष्टाचार देश के साथ विश्वासघात करने से कम नहीं है। उन्होंने कहा, "पिछले कुछ दिनों में नीट परीक्षा में बड़ा भ्रष्टाचार सामने आया है। नीट परीक्षा देश के लिए काफी महत्वपूर्ण है। मेडिकल कॉलेजों में सभी प्रवेश नीट के जरिए होते हैं।" उन्होंने कहा, "करीब एक लाख सीटें हैं और इन परीक्षाओं में 24 लाख छात्र बैठते हैं। विद्यार्थी इन परीक्षाओं की तैयारी काफी पहले से ही शुरू कर देते हैं और उनके परिवार भी परीक्षा तैयारी में शामिल होते हैं। शिक्षा में भ्रष्टाचार देश के साथ विश्वासघात से कम नहीं है।" पाठक ने कहा कि उनकी पार्टी इसे राजनीतिक मुद्दा नहीं बनाना चाहती, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस मामले में अपनी प्रतिक्रिया देनी चाहिए। उन्होंने कहा, "भाजपा ने देश में पेपर लीक को संस्थागत बना दिया है। पूरी समस्या की जड़ गुजरात है और 2015 से अब तक वहां एक भी परीक्षा ऐसी नहीं हुई, जिसका भ्रष्टाचार लीक नहीं हुआ हो। हम इसे राजनीतिक मुद्दा नहीं बनाना चाहते हैं।" पाठक ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी को इस मुद्दे पर जवाब देना चाहिए। उन्हें शिक्षा मंत्री को निलंबित करना चाहिए या संबंधित मंत्री को खुद ही इस्तीफा दे देना चाहिए।

राहुल हुए 54 वर्ष के, खरगो, अखिलेश और कई अन्य नेताओं ने बधाई दी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पार्टी के कई वरिष्ठ नेताओं व विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) के कुछ नेताओं ने बुधवार को राहुल गांधी को उनके जन्मदिन पर बधाई दी। कांग्रेस नेताओं ने राहुल गांधी को कमजोरों की आवाज, संविधान के प्रति अटूट आस्था रखने वाला तथा सत्ता को सच का आईना दिखाने वाला नेता बताया। राहुल गांधी का जन्म 19 जून, 1970 को नई दिल्ली में हुआ था। वह पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी और कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी की ज्येष्ठ संतान हैं। वर्तमान में वह उत्तर प्रदेश के रायबरेली से लोकसभा सदस्य हैं। इससे पहले वह केरल के वायनाड से सांसद थे। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने पार्टी मुख्यालय में खरगो के साथ मिलकर अपने जन्मदिन का केक काटा। इस मौके पर प्रियंका गांधी और कई अन्य नेता मौजूद थे।

केंद्रीय मंत्री ने एक कार्यक्रम में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा गलत लिखा, विपक्ष ने साधा निशाना

दक्षिण भारत राष्ट्रमत dakshinbharat.com

धार (मध्य प्रदेश)/भाषा। मध्यप्रदेश में एक कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा गलत लिखे जाने का वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहा है जिसके बाद विपक्षी दल कांग्रेस ने उनकी योग्यता पर सवाल उठाए हैं। यह कार्यक्रम धार के ब्रम्हा कुंडी स्थित एक सरकारी स्कूल में 18 जून (मंगलवार) को 'स्कूल चलो अभियान' के तहत आयोजित किया गया था जिसमें धार सीट से सांसद ठाकुर मुख्य अतिथि थीं। ठाकुर, केंद्रीय मंत्रिमंडल में महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री भी हैं। वीडियो में ठाकुर सफेद बोर्ड पर 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' को 'बेटी पडाओ' बयाव 'लिखती नजर आ रही हैं। इस संबंध में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता के.के. मिश्रा ने कहा, "यह लोकतंत्र का दुर्भाग्य है कि संवैधानिक पर्वों पर बैठे लोग और बड़े विभागों के जिम्मेदार लोग अपनी मातृभाषा में भी (लिखने में) सक्षम नहीं हैं। वे अपना ज्ञान कैसे संभाल पाएंगे?" उन्होंने कहा कि चुनाव में उम्मीदवारों की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता तय करने के लिए संविधान में संशोधन किया जाना चाहिए। कांग्रेस के मध्यप्रदेश इकाई के अध्यक्ष जीतू पटवारी के मीडिया सलाहकार मिश्रा ने कहा, "एक तरफ देश के नागरिकों के साक्षर होने का दावा किया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ जिम्मेदार लोगों में साक्षरता की कमी है। तो सच क्या है? यह किसी व्यक्ति विशेष से नहीं बल्कि व्यवस्था के जिम्मेदार लोग अपनी मातृभाषा जनता पार्टी (भाजपा) की जिला इकाई के अध्यक्ष मनोज सोमानी ने आरोप लगाया कि स्कूल चलो अभियान के दौरान जल्दबाजी में मंत्री द्वारा की गई गलती के वीडियो पर कांग्रेस का हंगामा उसकी 'छोटी और आदिवासी विरोधी सोच' को दर्शाता है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने राहुल गांधी के जन्मदिन पर उन्हें बधाई दी



चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एवं द्रविड़ मुनेत्र कडमम (द्रमुक) के अध्यक्ष एम के स्टालिन ने बुधवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी को उनके जन्मदिन पर बधाई दी और उनकी प्रशंसा करते हुए एक वीडियो व्लिप भी साझा किया। राहुल आज 54 वर्ष के हो गए।

स्टालिन ने 'एक्स' पर लिखा, प्रिय भाई राहुल गांधी आपको जन्मदिन मुबारक। देश की जनता के प्रति आपका समर्पण आपको अत्यंत ऊंचाई पर ले जाएगा। आपको शुभकामनाएं देता हूँ कि यह साल सतत प्रगति और सफलता से भरा रहे। वीडियो में स्टालिन को राहुल गांधी को 'डियर ब्रदर' (प्रिय भाई) संबोधित करते हुए सुना जा सकता है, इसमें तमिलनाडु की प्रशंसा करते हुए राहुल गांधी की भी एक व्लिप है। इसमें एक हिस्सा उस समय का भी है जब पिछले दिनों लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार के दौरान राहुल गांधी द्रमुक अध्यक्ष के लिए एक दुकान पर मिठाई खरीद रहे थे। इसमें राज्य में हुए विभिन्न आयोजनों की भी झलकियाँ हैं जिनमें दोनों नेताओं साथ-साथ हैं।



पुलिस ने विरोध मार्च निकाल रहे केएसयू कार्यकर्ताओं पर पानी की बौछारें कीं, महिलाओं से दुर्व्यवहार किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कन्नूर/पलक्कड़। केरल की वाम सरकार के खिलाफ बुधवार को कन्नूर और पलक्कड़ जिलों में मार्च निकालने वाले केरल स्टूडेंट यूनिन (केएसयू) के छात्रों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने पानी की बौछारें कीं और महिला प्रदर्शनकारियों को सड़क पर धसीटा। छात्र कार्यकर्ता उत्तरी केरल के मालाबार क्षेत्र के स्कूलों में 11वीं कक्षा की सीटों के कथित अभाव को मुद्दा उठा रहे थे। प्रदेश की वाम मोर्चा सरकार इस मसले

पर आलोचना का सामना कर रही है। इस क्षेत्र के मलप्पुरम जिले के परम्पनंगडी में 11 जून को एक छात्र ने कथित तौर पर इस धिता में आलहत्या कर ली थी कि उसमें अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए 11वीं कक्षा में दाखिला मिल पाएगा या नहीं।

राज्य में विपक्षी कांग्रेस की छात्र शाखा केएसयू के कई कार्यकर्ताओं ने कन्नूर में जिला कलेक्ट्रेट की ओर मार्च किया और मांग की कि स्कूलों में 11वीं की अतिरिक्त कक्षाएं स्थापित की जाएं। जब प्रदर्शनकारी मुख्यमंत्री पिनरई विजयन और सामान्य शिक्षा मंत्री वी शिवनकुट्टी के खिलाफ नारे लगाते

हुए आगे बढ़े तो पुलिस ने सड़क के बीच में रस्सी बांधकर उनका रास्ता रोक दिया। प्रदर्शनकारी नारेबाजी करते रहे और पीछे हटने से इनकार किया तो तो पुलिस ने दो बार पानी की बौछारें कीं। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को बैरिकेड पर करने से भी रोका।

केएसयू कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच मामूली झड़प भी हुई। इसके बीच पुलिस ने महिलाओं सहित प्रदर्शनकारियों को इलाके से जबरन हटा दिया। पुलिस को कई महिला प्रदर्शनकारियों को धसीटते हुए देखा जा सकता था। केएसयू कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि पुलिस ने उनकी पिटाई भी की।

भाजपा ने माकपा पर केरल के कन्नूर में शांतिपूर्ण माहौल बिगाड़ने की कोशिश करने का आरोप लगाया

तिरुवनंतपुरम। भारतीय जनता पार्टी ने राजनीतिक रूप से संवेदनशील कन्नूर जिले में एक बम धमाके में 86 वर्षीय एक व्यक्ति की मौत हो जाने के बाद, केरल में सत्तारूढ़ दल माकपा की कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) पर बुधवार को निशाना साधा और संदेह जलाया कि माकपा नेतृत्व क्षेत्र में शांतिपूर्ण माहौल को जानबूझकर बिगाड़ने की कोशिश कर रहा है।

पुलिस के अनुसार, मंगलवार को जिले में थलरसेरी के समीप 86 वर्षीय वेलायुधन एक वीरान स्थान से नारियल लाने गये थे और जब उन्होंने वहां पड़े एक बम को उठाकर खोलने का प्रयास किया तब उसमें धमाका हो गया और उनकी जान चली गयी। भाजपा ने आरोप लगाया कि हालिया लोकसभा चुनाव में माकपा को झटका लगने से वाम दल में जो संकट उत्पन्न हुआ है, उससे उबरने के लिए वह तनाव पैदा करने की कोशिश कर रही है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष के. सुरेंद्रन ने कहा कि जिस



स्थान पर बम धमाका हुआ है, वहां कई असामाजिक गतिविधियां होने की खबर है तथा वाम दल का नेतृत्व इन बातों से वाकिफ है। बुजुर्ग की मौत का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि धमाका उसी जगह पर हुआ जहां मादक पदार्थ का अवैध व्यापार एवं अन्य अवैध गतिविधियां होती थीं। उन्होंने बताया कि माकपा के नेताओं को भलीभांति मालूम है कि वहां बम बनाये जाते हैं। सुरेंद्रन ने संवाददाता सम्मेलन में कहा, चुनाव के समय कन्नूर में एक धमाके में एक बुजुर्ग की मौत तथा पन्नूर में एक माकपा कार्यकर्ता की हत्या की गहन जांच करायी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि बम धमाके जैसी घटनाएं इस संदेह को बल देती हैं कि माकपा नेतृत्व कन्नूर के शांतिपूर्ण वातावरण को बिगाड़ने की कोशिश कर रहा है। कन्नूर जिले में पुलिस अधिकारी ने संवाददाताओं से कहा कि प्राथमिक जांच के अनुसार ऐसा लगता है कि यह देशी बम था।

तमिलनाडु में करंट लगाने से नर हाथी की मौत

इरोड। तमिलनाडु के इरोड जिले के अंतियूर वन क्षेत्र में 12 वर्षीय एक नर हाथी की करंट लगने से मौत हो गई। वन अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। अंतियूर के वन अधिकारियों के अनुसार, ग्रामीणों ने मंगलवार शाम को थूका नाइकेन पलायम के पास करुमपर्राई वन क्षेत्र में एक हाथी को मृत पड़ा देखा। वन अधिकारियों की एक टीम मौके पर पहुंची और हाथी की जांच की। उनको संदेह है कि हाथी की मौत करंट लगने से हुई होगी। अधिकारियों ने बताया कि इस क्षेत्र में किसानों ने अपनी फसल को जानवरों से बचाने के लिए खेतों में लगी बाड़ में करंट की व्यवस्था कर रखी है। उनके अनुसार, पानी और खाने की तलाश में हाथी ने खेत में घुसने की कोशिश की होगी और बिजली के तार के संपर्क में आ गया होगा, जिससे उसकी मौत हो गई। अधिकारियों ने कहा कि बुधवार को पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारण का पता चल सकेगा।

तमिलनाडु : पूर्व मंत्री सैथिल बालाजी की न्यायिक हिरासत अवधि 25 जून तक बढ़ाई गई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। चेन्नई की एक सत्र अदालत ने बुधवार को तमिलनाडु के पूर्व मंत्री वी. सैथिल बालाजी की न्यायिक हिरासत 25 जून तक बढ़ा दी। द्रविड़ मुनेत्र कडमम (द्रमुक) के वरिष्ठ नेता बालाजी को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने धनशोधन के एक मामले में 14 जून, 2023 को गिरफ्तार किया था। अभियोजन पत्र में केंद्रीय सुझल जेल से वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये

सैथिल बालाजी को प्रधान न्यायाधीश एस. अली के समक्ष पेश किया। सुनवाई के बाद सत्र न्यायाधीश ने उनकी न्यायिक हिरासत 25



जून तक बढ़ा दी। वस्तुतः महिला न्यायाधीश एस. अली ने 14 जून को कहा था कि वह सैथिल बालाजी की याचिका पर बुधवार को आदेश पारित करेंगी, जिसमें पूर्व मंत्री ने इस मामले में आरोप-मुक्त का अनुरोध किया था। जब यह मामला बुधवार को सुनवाई के लिए आया

तो सैथिल बालाजी ने तीन और याचिकाएं दायर कीं। न्यायाधीश ने ईडी को इन तीन याचिकाओं पर अपना जवाबी हलफनामा दाखिल करने का

निर्देश दिया। एक याचिका में, सैथिल बालाजी ने वर्तमान कार्यवाही को स्थगित करने और मामले को बाद की किसी तारीख तक स्थगित करने का अनुरोध किया था। दो अन्य याचिकाओं में बालाजी ने आधाभूत दस्तावेज संख्या 16 और 17 में

गुम हुए दस्तावेजों को उच्चलब्ध कराने की मांग की है। ये दस्तावेज उनके खाते से संबंधित 'काउंटरफॉइल चालान' की प्रतियां हैं, जिन्हें ईडी ने अपनी जांच के दौरान इकट्ठा किया था।

ईडी ने कथित तौर पर नकदी लेकर नौकरी देने के मामले में से संबंधित धनशोधन मामले में बालाजी को 14 जून को गिरफ्तार किया था। यह कथित घोटाला ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कडमम (अन्नाद्रमुक) के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान हुआ था, जब वह परिवहन मंत्री हुआ करते थे।

कर्नाटक सरकार भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देने की नीति पर कर रही है विचार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूर। कर्नाटक के लघु सिंचाई और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री एन.एस. बोसराजू ने बुधवार को कहा कि राज्य सरकार पूरे प्रदेश में भूजल पुनर्भरण को बढ़ाने के उद्देश्य से एक नई नीति तैयार करने पर विचार कर रही है। यह घोषणा कर्नाटक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अकादमी द्वारा जल सुरक्षा के लिए सतत भूजल प्रबंधन पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान की गई। इस कार्यक्रम में बोसराजू ने भूजल स्तर में गिरावट की ओर इशारा किया और इस प्रवृत्ति के लिए बढ़ते शहरीकरण और वनों की कटाई को जिम्मेदार ठहराया।



उद्देश्यों के लिए भूजल पर ऐतिहासिक निर्भरता पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि इस महत्वपूर्ण संसाधन में गिरावट से भावी

पीढ़ियों के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो रहा है। मंत्री बोसराजू के कार्यालय द्वारा जारी एक बयान में उन्हें उद्धृत करते हुए कहा गया,

भूजल का दोहन बढ़ता जा रहा है, जबकि इसे पुनर्भरण करने के प्रयास कम होते जा रहे हैं। शहरी विस्तार के कारण प्राकृतिक

पुनर्भरण प्रक्रिया बाधित हो रही है। इन प्रभावों को कम करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है, अन्यथा हमारे उत्तराधिकारियों को इसके परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

वर्तमान सूखे ने जल संरक्षण की आवश्यकता को उजागर किया है ऐसे में भूजल के अधिक दोहन को रोकने के लिए, मंत्री ने वर्षा जल संचयन प्रणालियों को लागू करने तथा भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित किया।

उन्होंने टिकाऊ पद्धतियों को अपनाने के लिए सामूहिक प्रयास का आह्वान किया और कहा कि भूजल निदेशालय ऐसी नीति पर सक्रियता से विचार कर रहा है जो ऐसी पहलों के लिए प्रोत्साहन प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने भी इस संबंध में रुचि दिखाई है।



चन्नपट्टनम में बुधवार को राधवेन्द्र मठ और कोटे श्री वरदराजस्वामी मंदिर का दौरा करते उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार।

कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री ने चन्नापटना विधानसभा उपचुनाव लड़ने के संकेत दिए

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूर। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने चन्नपटना विधानसभा उपचुनाव लड़ने की संभावना से इनकार नहीं किया और बुधवार को कहा कि वह पार्टी और क्षेत्र के मतदाताओं के 'कैसे' को मानने के लिए बाध्य हैं। पड़ोसी जिले रामनगर के एक शहर के दौरे से पहले कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष शिवकुमार ने संवाददाताओं से कहा, चन्नपटना मेरे दिल के सबसे करीब है। चन्नपटना ही वह जगह है जहां से मैंने राजनीति की शुरुआत की। जनता दल-सेक्युलर (जद-

एस) के नेता एवं केंद्रीय मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी के लोकसभा के लिए निर्वाचित होने के बाद चन्नपटना विधानसभा सीट रिक्त हो गई है, ऐसे में इस सीट पर उपचुनाव जरूरी है। इस सीट पर उपचुनाव के कार्यक्रम को लेकर निर्वाचन आयोग की ओर से फिलहाल कोई घोषणा नहीं की गई है। शिवकुमार ने कहा, चन्नापटना भी पहले साथनूर का हिस्सा था। मुझे चन्नपटना से खासा लगाव है, मैं चन्नपटना को चुनाव लड़ते हैं और जीत हासिल करने में कामयाब होते हैं तो वह सुरेश के लिए एक कनकपुरा विधानसभा सीट खाली कर सकते हैं। वर्तमान में शिवकुमार कनकपुरा सीट से विधायक हैं।

हमारे पास इसके प्रत्यक्षदर्शी भी हैं। दंपति ने कहा, सांप संभवतः स्पेक्टैकल कोबरा (नाजा नाजा) है, जो कर्नाटक में पाया जाने वाला सबसे विषैला सांप है। दंपति ने बताया कि सांप पार्सल को बचाने वाले टैप से चिपका हुआ था। उन्होंने बताया कि सांप ने उनके घर या अपार्टमेंट में किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया है। दंपति ने बताया कि उन्हें अपने ऑर्डर के बदले पूरा पैसा वापस मिल गया है, लेकिन उन्हें आश्चर्य है कि 'अत्यधिक विषैले सांप के साथ अपनी जान जोखिम में डालने के बदले उन्हें कया मिला।' उन्होंने आरोप लगाया, यह स्पष्ट रूप से सुरक्षा उल्लंघन है जो केवल अमेजन की लापरवाही और उनके खराब परिवहन, गोदाम की रक्षकता एवं रखरखाव में कोताही के कारण हुआ है।

बधाई



बेंगलूर में बुधवार को समाज कल्याण विभाग और कर्नाटक एसोसिएशन ऑफ रेजिडेंशियल एजुकेशनल इंस्टीट्यूट्स द्वारा आयोजित प्रतिभा पुरस्कार के दौरान मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने एसएसएलसी और पीयूसी टॉपर्स को बधाई दी।

केरल की स्वास्थ्य मंत्री को कुवैत जाने की अनुमति न देने पर विजयन ने मोदी को पत्र लिखा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

तिरुवनंतपुरम। केरल के मुख्यमंत्री पिनरई विजयन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर राज्य की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज को खाड़ी देश में आग की घटना के बाद राहत प्रयासों का समन्वय करने के लिए कुवैत की यात्रा करने की राजनीतिक मंजूरी नहीं देने का मुद्दा उठाया है। मुख्यमंत्री ने 15 जून को प्रधानमंत्री को लिखे अपने पत्र में दावा किया है कि राज्य के स्वास्थ्य मंत्री को यात्रा की मंजूरी न देना 'सहकारी संघवाद के सिद्धांतों के खिलाफ है'। उन्होंने

प्रधानमंत्री से अनुरोध किया है कि वह विदेश मंत्रालय को सलाह दें कि भविष्य में यह ऐसे अनुरोधों के प्रति 'अधिक संवेदनशील' रहे। बुधवार को सार्वजनिक हुए पत्र में मुख्यमंत्री विजयन ने लिखा है कि यह 'अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण' है कि राजनीतिक मंजूरी के अनुरोध पर विदेश मंत्रालय की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, जिसके चलते स्वास्थ्य मंत्री जॉर्ज कुवैत की यात्रा नहीं कर सकीं। उन्होंने कहा, अग्रिकांड के बाद कुवैत में उनकी उपस्थिति से केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री, अधिकारियों की टीम और दूतावास के साथ संपर्क और समन्वय बनाने में काफी मदद मिलती। इससे इस त्रासदी में

प्रभावित परिवारों को मानसिक राहत और आत्मविश्वास मिल सकता था। केरल के मुख्यमंत्री ने कहा कि मुश्किल की इस खड़ी को इरादा नहीं था, लेकिन यदि राजनीतिक मंजूरी के अनुरोध पर विदेश मंत्रालय के कार्यालय की बात प्रधानमंत्री के ध्यान में नहीं लाई गई, तो राज्य सरकार अपने कर्तव्य को पूरा करने में विफल रहेगी। उन्होंने कहा, राज्य मंत्रिमंडल के सामूहिक निर्णय की अवहेलना की गई है। 28 फरवरी, 2023 के कैबिनेट सचिवालय के कार्यालय ज्ञापन के अनुसार राजनीतिक मंजूरी का अनुरोध किया गया था।

रेणुकास्वामी हत्याकांड

'दर्शन फैन क्लब पर है पुलिस की नजर'

पुलिस अधिकारी ने कहा, अपने धनबल एवं प्रभाव से दर्शन उन्हें बचा रहे थे। जब कभी दर्शन की फिल्म रिलीज होती है तो इस 'फैन क्लब' के सदस्यों को इन फिल्मों के वास्ते बैंक्स ऑफिस पर अनुकूल माहौल तैयार करने के लिए दर्शन और फिल्म निर्माता, निर्देशक एवं 'फाइनेंसर' (फिल्म में पैसा लगाने वाले) कथित रूप से भारी-भरकम रकम देते हैं। सूत्रों का कहना है कि दर्शन की फिल्मों से प्राप्त होने वाली कमाई में अच्छी हिस्सेदारी के लिए ये फैन क्लब उनकी फिल्मों की सफलता के लिए जी-तोड़ कोशिश करते हैं। सूत्रों के मुताबिक विभिन्न जिलों में उनके बीच प्रतिस्पर्धा होती है। सूत्रों ने कहा, यह भी देखा गया कि जब दर्शन की फिल्में और उनके प्रतिद्वंद्वी अभिनेता की फिल्में साथ रिलीज होती हैं तब (दर्शन) इन फैन क्लब के सदस्य दूसरे अभिनेता के फैन क्लब के सदस्यों से भिड़ जाते हैं।

रेणुकास्वामी के अपहरण में अहम थी। उनके अनुसार पुलिस पूरे राज्य में 'दर्शन फैन क्लब' के प्रमुख सदस्यों और उनकी गतिविधियों की 'जांच-परख' कर रही है क्योंकि उनपर कुछ असामाजिक तत्वों को प्रश्रय देने का संदेह है। एक अन्य पुलिस अधिकारी ने कहा, अपने धनबल एवं प्रभाव से दर्शन उन्हें बचा रहे थे। पुलिस सूत्रों ने कहा कि जब कभी दर्शन की फिल्म रिलीज होती है तो इस 'फैन क्लब' के सदस्यों को इन फिल्मों के वास्ते बैंक्स ऑफिस पर अनुकूल माहौल तैयार करने के लिए दर्शन और फिल्म निर्माता, निर्देशक एवं 'फाइनेंसर' (फिल्म में पैसा लगाने वाले) कथित रूप से भारी-भरकम रकम देते हैं। सूत्रों का कहना है कि दर्शन की फिल्मों से प्राप्त होने वाली कमाई में अच्छी हिस्सेदारी के लिए ये फैन क्लब उनकी फिल्मों की सफलता के लिए जी-तोड़ कोशिश करते हैं। सूत्रों के मुताबिक विभिन्न जिलों में उनके बीच प्रतिस्पर्धा होती है। सूत्रों ने कहा, यह भी देखा गया कि जब दर्शन की फिल्में और उनके प्रतिद्वंद्वी अभिनेता की फिल्में साथ रिलीज होती हैं तब (दर्शन) इन फैन क्लब के सदस्य दूसरे अभिनेता के फैन क्लब के सदस्यों से भिड़ जाते हैं।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूर। रेणुकास्वामी हत्याकांड की जांच कर रही कर्नाटक पुलिस की नजर अब कन्नड़ अभिनेता दर्शन थूरुदीप के 'फैन क्लब' पर है। इस हत्याकांड में कन्नड़ अभिनेता और उनकी दोस्त पवित्रा गौड़ा को 15 अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार किया गया है। अभिनेता के प्रशंसक रेणुकास्वामी को उसके गृहनगर चिन्नदुरग से 'क्लब' का एक प्रमुख सदस्य अगवा कर बेंगलूर ले आया था। यहां रेणुकास्वामी का उल्पीडन किया गया एवं उसकी हत्या कर दी गयी और नौ जून को उसका शव मिला था।

पुलिस सूत्रों के अनुसार रेणुकास्वामी ने गौड़ा को अश्लील संदेश भेजे थे जिससे अभिनेता नाराज हो गये थे, फलस्वरूप उसकी (रेणुकास्वामी) कथित रूप से हत्या कर दी गयी। एक पुलिस अधिकारी ने कहा, खासकर रेणुकास्वामी हत्याकांड के बाद 'फैन क्लब' की भूमिका बढ़ा संदिग्ध है। चिन्नदुरग दर्शन 'फैन क्लब' के संयोजक राधवेन्द्र उर्फ रघु एवं उसके साथियों की भूमिका





‘आपणो अग्रणी राजस्थान’ की नींव में उद्यमियों की महत्वपूर्ण भूमिका : भजनलाल शर्मा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान में उद्योग की अपार संभावनाएं हैं। एक उद्योग की स्थापना से पूरे क्षेत्र का विकास होता है। उद्यमी न केवल रोजगार प्रदाता है बल्कि आपणो अग्रणी राजस्थान की नींव तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार उद्योगपतियों से प्राप्त सुझावों के आधार पर इस तरह का बजट लाएगी जिसमें राज्य का 2047 तक का विजन शामिल होगा।

शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में बजट पूर्व चर्चा के दौरान उद्योग, व्यापार एवं कर सलाहकार संघों के प्रतिनिधियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पूरे देश के उद्योगपति राज्य में निवेश करने के लिए उत्सुक हैं। राज्य सरकार उद्योगों के लिए इस तरह का वातावरण तैयार करेगी जिसमें उद्योगपति को सभी तरह की सुविधाएं एक ही छत के नीचे मिल सकें। उन्होंने आश्चर्य किया कि राज्य सरकार उद्योगों को अधिक से अधिक प्रोत्साहित कर रोजगार सृजन करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व

में लघु उद्योगों के प्रोत्साहन के लिए ‘वोकल फॉर लोकल’ अभियान राज्य सरकार की प्राथमिकता है। सरकार लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कृत संकल्पित है।

बैठक में कुछ उद्यमियों द्वारा उठाई गई बिजली की कमी की समस्या पर मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने अपने 6 माह के कार्यकाल में ही बिजली आपूर्ति के लिए ऐतिहासिक एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। साथ ही, सौर ऊर्जा एवं कुसुम योजना को भी राज्य सरकार लगातार प्रोत्साहित कर रही है।

इन योजनाओं के धरातल पर उतरने के बाद उद्योगों में बिजली आपूर्ति की समस्या से निजात मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार द्वारा हजारों करोड़ों का घाटा बिजली के क्षेत्र में किया गया। उस सरकार द्वारा अगस्त-सितंबर में बिजली खरीदी गई जिसके फलस्वरूप हमें मई-जून की भीषण गर्मी में उधारी चुकानी पड़ रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा हाल ही में किए गए निर्णयों से भविष्य में उद्योगों के लिए बिजली की समस्या का समाधान हो पाएगा। शर्मा ने उद्योगपतियों से भी अपील की कि वे उद्योगों में सौर ऊर्जा का अधिक से अधिक उपयोग करें।

मुख्यमंत्री ने उद्योगपतियों को

संबोधित करते हुए कहा कि आपका इस क्षेत्र में वृद्ध अनुभव है। उद्योगपति किसी एक उद्योग के बारे में सुझाव देने के साथ ही राज्य में औद्योगिक विकास को बेहतर बनाने के लिए भी सुझाव दें जिससे राजस्थान प्रगतिशील, विकसित तथा औद्योगिक दृष्टि से समृद्ध बन सके। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का हर संभव प्रयास रहेगा कि राज्य में स्थापित उद्योग की प्रत्येक इकाई अग्रणी बने। राज्य सरकार अपनी नीति, कार्यक्रमों एवं योजनाओं के माध्यम से उद्योगपति एवं व्यापारियों के हितों का संरक्षण करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न व्यापारिक एवं औद्योगिक संघों से प्राप्त सुझाव लाभकारी हैं तथा इनका परीक्षण कर उचित सुझावों को परिवर्तित बजट में शामिल करने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार औद्योगिक विकास को गति देने के लिए आगे भी उद्यमियों के साथ लगातार संवाद बनाए रखेगी। उन्होंने आश्चर्य किया कि राज्य में उद्योग एवं निवेश को प्रोत्साहन देने में किसी भी तरह की कमी नहीं होने दी जाएगी।

उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दीपा कुमारी ने कहा कि राज्य के औद्योगिक विकास के लिए सरकार एवं उद्योगपति मिलकर काम करेंगे तथा राज्य को इंडस्ट्री

हब बनाया जाएगा। उद्योग मंत्री कर्नल केशव सिंह राठौड़ ने कहा कि हमारा लक्ष्य है ईज ऑफ डूइंग बिजनेस हो। साथ ही, उद्योगों की लागत कम हो जिससे अधिक से अधिक रोजगार सृजन हो सके। उद्योग राज्य मंत्री के. के. विश्वेश्वर ने कहा कि उद्यमियों के अनुभवों एवं सुझावों का लाभ लेते हुए राज्य को औद्योगिक रूप से समृद्ध बनाया जाएगा।

बैठक में उद्योगपतियों ने मुख्यमंत्री की वित्त 2047 की परिकल्पना की तारीफ की। साथ ही, सरकार द्वारा उद्योगों के हित में लिए गए लगातार निर्णयों के लिए भी धन्यवाद दिया। बैठक में सीआईआई, फोर्टी, यूकोरी, एसोबेन, ज्यूलर्स एसोसिएशन, राजस्थान टैक्स बार एसोसिएशन, राजस्थान लघु उद्योग महासंघ, कोटा इंडस्ट्रीज के प्रतिनिधि तथा मार्बल, टेक्सटाइल, होटल, सिनेमा, वेयरहाउस, स्टील, प्लास्टिक, बिल्डर्स, डबलपर्स, ऑयल, सीमेंट सहित विभिन्न क्षेत्रों की संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपने सुझाव प्रस्तुत किए। इस दौरान अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोरा, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल एवं प्रमुख सचिव आलोक गुप्ता, संबोधित विभागीय अधिकारी एवं उद्योग और व्यापारी संस्थाओं के प्रतिनिधि मौजूद थे।

जल्द से जल्द नियम बनाकर ‘स्वास्थ्य का अधिकार’ लागू करे सरकार : गहलोत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राज्य की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार से ‘स्वास्थ्य का अधिकार’ के नियम जल्द से जल्द बनाकर लागू करने की मांग की है और उन्होंने कुछ चिकित्सकों द्वारा ‘चिरंजीवी योजना’ को कथित तौर पर विफल बताए जाने की आलोचना की। गहलोत ने सोशल मीडिया मंच ‘एक्स’ पर पोस्ट कर कहा, हमारी सरकार ने ‘राइट टू हेल्थ’ का कानून बनाया ताकि आपातकालीन परिस्थितियों में चिकित्सा इलाज हो सके। वर्तमान सरकार को चिकित्सकों के संघों को विश्वास में लेकर ‘राइट टू हेल्थ’ के

नियम जल्द से जल्द बनाकर लागू करने चाहिए जिससे राजस्थान के हर निवासी को इलाज का अधिकार मिले।

कुछ मीडिया खबरों के अनुसार मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साथ बजट पूर्व समीक्षा में कुछ निजी चिकित्सकों ने पूर्ववर्ती गहलोत सरकार की आलोचना की थी। इस पर पलटवार करते हुए गहलोत ने कहा, बजट पूर्व चर्चा में किसी चिकित्सक द्वारा मेरे ऑपरेशन पर तथ्यात्मक रूप से दिया गया गलत बयान मीडिया के माध्यम से निःशुल्क इलाज हो सके। वर्तमान सरकार का ऑपरेशन फरवरी 2019 में हुआ था जबकि चिरंजीवी योजना

मई 2021 से शुरू हुई थी। गहलोत ने कहा, मेरी आर्टी में ब्लॉकिंग, पेरों के अंगुठों में फ्रैक्चर एवं कोविड के बाद हैम्पी हाइपॉक्सिया होने पर इसका इलाज जयपुर के एसएमएस अस्पताल में ही हुआ जिसके कारण मैं यहां कुछ दिन भर्ती भी रहा और सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर ही इलाज कराया।

उन्होंने कहा, चिरंजीवी योजना से लाखों लोगों के जीवन में सुधार हुआ है। अगर वे योजना न होती तो न जाने कितने गरीबों और मध्यम वर्गीय परिवारों की जमीन-जायदाद इलाज के लिए बिक जाती। निजी अस्पतालों के कुछ चिकित्सकों को ऐसा असत्य बोलकर एक अच्छी योजना एवं मेडिकल जैसे पवित्र पेशे को बदनाम करने से बचना चाहिए।



जल संकट बड़ी चुनौती, संरक्षण के लिए शैक्षिक क्षेत्र में हो पहल : राज्यपाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने जल संकट को बड़ी चुनौती बताते हुए बुधवार को कहा कि जल संरक्षण के प्रति जागरूकता हेतु शैक्षिक क्षेत्र में पहल हो। यह उद्योग राज्यपाल विद्यालयों के 33वें वार्षिक समारोह और यहां निर्मित संविधान पार्क के लोकार्पण पश्चात आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के समक्ष मानवीय मूल्य बचाए रखने की आज बड़ी चुनौती है। उनका कहना था कि अधांधुध जल-दोहन से राजस्थान ही नहीं, देशभर में जल संकट की स्थितियां बन रही हैं, ऐसे में विश्वविद्यालय इन

चुनौतियों के आलोक में शैक्षिक पहल करे।

उन्होंने कहा कि यही शिक्षा सार्थक है जो विद्यार्थी को पाठ्यपुस्तकों के साथ परिवेश की समझ से जोड़े। उन्होंने कहा कि रटेंट शिक्षा डिग्री प्रदान कर सकती है पर जीवन में आगे नहीं बढ़ा सकती। आधिकारिक बयान के अनुसार, मिश्र ने सभी विश्वविद्यालयों को नई शिक्षा नीति को पूरी तरह से अपने यहां लागू करने और ऐसे पाठ्यक्रम बनाने पर जोर दिया जिससे भारत विकास की राह पर तेजी से अग्रसर हो सके।

उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली नई पीढ़ी संविधान के मर्म को समझे, इसी उद्देश्य से राजभवन की पहल पर विश्वविद्यालयों में संविधान पार्क निर्मित करने की पहल हुई है। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय

युवाओं को समय और अधुनातन आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करें ताकि वे देश के मूल्यवान नागरिक बन सकें। उपमुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमचंद बेरवा ने राज्य सरकार द्वारा उच्च शिक्षा के लिए किये जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. अल्पना कटेजा ने विश्वविद्यालय का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर राज्यपाल एवं कुलाधिपति मिश्र ने विश्वविद्यालय में अध्ययन करने वाले एक लाख, 66 हजार, 139 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान कीं। विभिन्न संकायों के 467 विद्यार्थियों को पी एच डी की उपाधि एवं विभिन्न परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 126 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए।



सिकल सेल उन्मूलन के लिए समन्वित प्रयासों की जरूरत : खराड़ी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने कहा कि सिकल सेल बीमारी के बारे में कुछ समय पहले तक कोई नहीं जानता था, लेकिन यह बीमारी बड़े पैमाने पर लोगों को प्रभावित किए हुए है। खास कर जनजाति क्षेत्रों में इसका प्रकोप अधिक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिकल सेल उन्मूलन का बीड़ा उठाया है। विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों में सिकल सेल उन्मूलन को भी शामिल किया गया है। इससे इस बीमारी की गंभीरता का अंदाजा लगाया जा सकता है। सिकल सेल उन्मूलन के लिए जनजाति और समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।

आई है। उन्होंने कहा कि चिकित्सक समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई हैं। चिकित्सक अपनी जिम्मेदारी का बहुत अच्छी तरह से निर्वहन कर रहे हैं।

सिकल सेल को लेकर भी आमजन को जागरूक करने की आवश्यकता है। केबिनेट मंत्री खराड़ी ने सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सिकल सेल के पृथक भवन के लिए प्रस्ताव भिजवाने की बात कहते हुए हर्संभव मदद का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि पैसा उतना का है और जनता के काम आना चाहिए। यह बीमारी सर्वाधिक जनजाति क्षेत्र में व्याप्त है तो उसके निराकरण के लिए जितना भी सहयोग किया जाए कम है। विशिष्ट अतिथि सांसद डॉ. मन्नालाल रावत ने कहा कि सिकल सेल का सर्वाधिक प्रभाव 0 से 40 वर्ष आयु वर्ग में है। यही पीढ़ी है जिस पर आर्थिक, सामाजिक सभी चिकित्सालय परिसर स्थित न्यू ऑडिटोरियम में आरएनटी मेडिकल कॉलेज और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सिकल सेल के तत्वाधान में विश्व सिकल सेल दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सिकल सेल को लेकर जागरूकता कार्यक्रम बनाने और उसमें गांव स्तर के युवाओं का सहयोग लेने का आह्वान किया। उदयपुर शहर विद्यालय ताराचंद जैन ने स्वयं का उदाहरण देते हुए परिणाम स्वरूप बीमारियों में कमी

कार्यप्रणाली पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आमजन में अभी भी संशय है कि सरकारी अस्पताल में इलाज ठीक से नहीं होता। इस भ्रंति को दूर करने की जरूरत है।

जिला कलक्टर अरविंद पोसवाल ने सिकल सेल को लेकर उदयपुर जिले में हुए काम की प्रशंसा करते हुए कहा कि उदयपुर जिले को 3 वर्ष में 12 लाख लोगों की स्क्रीनिंग का इच्छा लया था। इसके सिकल सेल के संबंध में व्यापक जनजागृति पर जोर दिया। उन्होंने आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य को आगामी समय में पंचायती राज जनप्रतिनिधियों के लिए भी सिकल सेल अवेयरनेस कार्यशालाएं आयोजित करने का सुझाव दिया, ताकि गांव स्तर तक इस बीमारी के बारे में जागरूकता लाई जा सके।

कार्यशाला के दौरान जनजाति मंत्री खराड़ी सहित अन्य अतिथियों ने आरएनटी मेडिकल कॉलेज के न्यायाचार सेट्टु- (रैपिड रेफरल रेड्यूसल रिस्टम/एक त्वरित रेफरल निवारण प्रणाली) के क्यूआर कोड पोस्टर का विमोचन करते हुए शुभारंभ किया। आरएनटी प्राचार्य डॉ. विपिन माथुर ने सेटु के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि यह एक अत्याधुनिक पहल है जो रोगियों को बेहतर और शीघ्र चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए डिजाइन की गई है।



वन मंत्री ने राजस्थान राज्य वन विकास निगम के कार्यों की पहली समीक्षा बैठक ली

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री संजय शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार को शासन सचिवालय में राजस्थान राज्य वन विकास निगम के कार्यों के प्रगति की पहली वार्षिक जनरल बॉडी एवं आठवीं बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की बैठक आयोजित की गई। मंत्री संजय शर्मा ने निगम की आगामी पांच वर्षों की कार्य योजना बनाकर गतिविधियां शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने निगम की नई प्रस्तावित गतिविधियों में वाणिज्य नर्सरी की स्थापना के लिए विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर कार्य को तय समय में पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने निगम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे एवं अन्य अवशक्तियों की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश

भी दिए। उन्होंने राज्य वन निगम के आय के स्रोतों को बढ़ाने के लिए इको-ट्यूरिज्म को बढ़ावा देने की योजना का विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाकर कर ऐसे स्थलों, जो इको-ट्यूरिज्म की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, का जल्द से जल्द विकास करने का सुझाव दिया ताकि पर्यटन से निगम की आय बढ़ सके।

विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती अपर्णा अरोड़ा ने राज्य वन विकास निगम के गत तीन वर्षों के राजस्व लेखा जोखा की समीक्षा करते हुए कहा कि निगम की वर्तमान गतिविधियां गंग-भाखड़ा नहर के साथ पेड़ों की कटाई एवं पुनः रोपण, बांस की कटाई एवं वृक्षारोपण, जूलीफ्लोरा के उन्मूलन के कार्यों को प्रभावी रूप से करने के निर्देश दिए। उन्होंने निगम की आय के स्रोत बढ़ाने के लिए नवाचार एवं अन्य गतिविधियों को शामिल करने के भी निर्देश दिए। निगम के मैनेजिंग डायरेक्टर उदय शंकर ने

वन मंत्री को पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से राज्य वन विकास निगम की संरचना, कार्यप्रणाली, वर्तमान में चल रही गतिविधियों एवं प्रस्तावित नई गतिविधियों के बारे में विस्तार से अवगत कराते हुए कार्यों की प्रगति के बारे में जानकारी दी। बैठक में वन मंत्री संजय शर्मा को वन निगम के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति एवं अन्य बोर्ड मेंबर्स की नियुक्ति के प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया।

साथ ही निगम के सुचारु संचालन के लिए शेड्यूल ऑफ पावर्स से संबंधित सभी बिन्दुओं पर चर्चा कर अनुमोदन किया गया। बैठक में प्रधान मुख्य वन संरक्षक (हॉफ) अरिजुत बर्नार्जी, जनजातीय विभाग आयुक्त श्रीमती प्रज्ञा केवलरमणि, सेटलमेंट कमिश्नर नरेंद्र गुप्ता अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक मुख्यालय अरुण प्रसाद एवं वन विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

विधान सभा में सामूहिक योग कल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनांनी ने अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर प्रदेशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा है कि स्वयं और समाज के लिए योग करें। योग का अर्थ जीवन में संतुलन है। योग स्वयं और समाज के मध्य संतुलन बनाने का बेहतर माध्यम है। योगासन भारत की प्राचीन विधि है, जो शरीर, मन और आत्मा के मध्य संतुलन स्थापित करने के लिए प्रयुक्त की जाती है। योग के माध्यम से शरीर की ऊर्जा को नियंत्रित और संतुलित किया जाता है।

विधान सभा अध्यक्ष देवनांनी ने कहा कि सभी मिल-जुलकर स्वस्थ भारत की रचना करें। उन्होंने कहा कि शरीर, मन और मस्तिष्क स्वस्थ रहेंगे तब ही राष्ट्र की उन्नति होगी। राष्ट्र को स्वस्थ बनाने के लिए योग, यज्ञ और संतुलित आहार को आचरण में लाएं। भारत विश्व गुरु है। भारत की परम्पराएं समृद्ध हैं। सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से राष्ट्र समृद्ध है। निरोगी राष्ट्र बनाने के लिए योग को



योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाएं : कुमावत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग मंत्री जोराराम कुमावत ने बुधवार को पाली विधानसभा क्षेत्र के खीमाड़ा ग्राम में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों से निर्मित विभिन्न कार्यों का लोकार्पण किया। इस मौके पर मंत्री कुमावत ने विद्यालय में हीटदेव जनित बीमारियों से लोगों को तत्काल राहत मिल सकी और मौतों की संख्या को नियंत्रित किया जा सके। उन्होंने कहा कि मानसून के दौरान भी इसी तरह संकल्पित भाव से काम कर आमजन को राहत पहुंचाएं।

को विभिन्न प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता था लेकिन अब इसके निर्माण से काफी हद तक राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन के तहत बालिकाओं के लिए शौचालय निर्माण करवाया जाएगा साथ ही ग्रामीणों को पेयजल के लिए किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो इसके लिए जल जीवन मिशन योजना के तहत नई पाइप लाइन जालने के साथ ही क्षतिग्रस्त पाइपलाइनों का दुरुस्तीकरण किया जाएगा। पशुपालन मंत्री ने कहा कि वर्तमान समय में पेड़ों की कटाई के कारण पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया है जिसे अधिक से अधिक पोषरोपण करके ही संतुलित किया जा सकता है।

चिकित्सा मंत्री ने विभागीय अधिकारियों को किया अलर्ट, पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित करने के लिए निर्देश

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवर ने चिकित्सा विभाग के अधिकारियों एवं कार्मिकों को आगामी मानसून में मौसमी बीमारियों की प्रभावी रोकथाम को लेकर अलर्ट किया है। उन्होंने कहा है कि राजधानी से लेकर गांव-ढाणी तक मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित किए जाएं। किसी भी स्तर पर कोई कमी नहीं रहे। खींवर बुधवार को स्वास्थ्य भवन में मौसमी बीमारियों से बचाव की तैयारियों को लेकर मीडियो

कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मौसम विभाग के अनुसार प्रदेश में जुलाई माह में मानसून आने की संभावना है। इसे देखते हुए मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि मौसमी बीमारियों से बचाव, अतिवृष्टि की स्थिति में बचाव, चिकित्सा संस्थानों में आवश्यक मरम्मत कार्यों सहित आवश्यक व्यवस्थाएं समय पर की जाएं।

चिकित्सा मंत्री ने कहा कि संयुक्त निदेशक जोन एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी फील्ड में जाकर तैयारियों की प्रभावी मॉनिटरिंग सुनिश्चित करें। बारिश शुरू होने से पहले सभी चिकित्सा संस्थानों में दवा, जांच,

उपचार सहित अन्य स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर इंतजाम सुनिश्चित किए जाएं। उन्होंने कहा कि नियंत्रण कक्षा का सुचारु संचालन हो। रेपिड रेस्पॉन्स टीमें अलर्ट रहें। जिला प्रशासन एवं संबंधित विभागों के साथ बेहतर तालमेल रखा जाए। खींवर ने कहा कि लू-तापघात से बचाव के लिए विभागीय अधिकारियों एवं कार्मिकों ने प्रभावी इंतजाम सुनिश्चित किए, जिसके कारण प्रदेश में हीटदेव जनित बीमारियों से लोगों को तत्काल राहत मिल सकी और मौतों की संख्या को नियंत्रित किया जा सके। उन्होंने कहा कि मानसून के दौरान भी इसी तरह संकल्पित भाव से काम कर आमजन को राहत पहुंचाएं।

सुविचार

दुनिया में रहने की सबसे अच्छी
दो जगह है, एक किसी के दिल में
और दूसरे किसी की दुआओं में।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

एक कदम और बढ़ाएं

भारत में ईंधन की मांग लगातार बढ़ने का सीधा-सा अर्थ यह है कि देश प्रगति कर रहा है। दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए हमें इस तरह तैयारी करनी होगी, जिससे न तो आर्थिक गतिविधियों के चक्र की रफ्तार कम हो और न ही विदेशी मुद्रा भंडार से अत्यधिक राशि खर्च हो। अभी हर साल देश के खजाने से मोटी रकम ईंधन बिल चुकाने में जा रही है। हमारी मेहनत की कमाई का एक बड़ा हिस्सा तो तेल खरीदने के बदले सऊदी अरब, रूस, इराक, यूएई जैसे देशों के खाते में चला जाता है। वहीं, गैस खरीदने के लिए भी सऊदी अरब, कतर, ओमान और कुवैत जैसे देशों पर निर्भरता है। कोरोना काल के बाद रूसी गैस की कीमतें काफी बढ़ गई हैं। हालांकि उज्वला योजना के कारण लोगों को काफी राहत मिली है, लेकिन मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए कीमतें ज्यादा ही हैं। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) ने तो यह कहा है कि भारत इस दशक के उत्तरार्ध में ईंधन की मांग में अग्रणी बन जाएगा। हर साल जब विपक्ष महंगाई को लेकर सरकार को घेरता है तो विरोध-प्रदर्शन के दौरान गैस सिलेंडर जरूर रखता है। वह सिलेंडर की कीमतों का उल्लेख करते हुए कहता है कि महंगाई ने रूसी का बजट बिगाड़ दिया है। हालांकि वह यह नहीं बताता कि अगर खुद सत्ता में आएगा तो कौनसा फॉर्मूला लगाकर गैस सिलेंडर की कीमतें कम करेगा? एक सीधा-सा तर्क यह दिया जाता है कि ईंधन की कीमतें अंतरराष्ट्रीय बाजार और विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर निर्धारित होती हैं। अगर चीज बाहर से ही महंगी आएगी तो यहां लोगों को सस्ती कैसे दी जाएगी? बात काफी हद तक सही है।

अगर ईंधन की कीमतें इसी तरह बढ़ती रहें तो हमें इसका दूसरा विकल्प खोजना चाहिए, खासकर रूसी गैस का। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र कहते हैं कि 'प्रकृति के संतुलन को क्षति पहुंचाए बिना विकास होना चाहिए', लेकिन कड़वी हकीकत है कि इस राज्य में ईंधन के लिए पेड़ों को बहुत नुकसान पहुंचाया गया है, पहुंचाया जा रहा है। यही स्थिति कई राज्यों में है। इस साल जितनी भयंकर गर्मी पड़ रही है, उसने एक बार फिर पेड़-पौधों की अहमियत साबित कर दी है। यहां केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीपद नाइक का यह बयान उम्मीद जगाने वाला है कि 'ऊर्जा उत्पादन के परंपरागत तरीकों पर निर्भरता घटाने पर जोर रहेगा ... यह हमारे पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों के हित के लिए आवश्यक है।' बेशक सरकार ने देश के गांव-ढाणियों तक गैस सिलेंडर पहुंचाकर गृहिणियों के लिए काफी आसानी पैदा कर दी है। उन्हें थुपे से निजात मिली है। अब एक कदम और आगे बढ़ाने का समय है। सरकार को चाहिए कि रूसी गैस में सौर ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूर्व में रूसी गैस में सौर ऊर्जा के उपयोग का आह्वान कर चुके हैं। उन्होंने सितंबर 2017 में पेट्रोसियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अधिकारियों को संबोधित करते हुए रूसी ईंधन के लिए ऐसा समाधान पेश करने के लिए कहा था, जो इस्तेमाल करने में आसान हो और वह परंपरिक चूल्हों की जगह ले सके। इसके बाद एक सोलर स्टोव का नाम भी काफी चर्चा में रहा था, लेकिन उसके बारे में लोगों को ज्यादा जानकारी नहीं मिली। लोग सोशल मीडिया पर उसके वीडियो देखते हैं, उसे खरीदने की इच्छा व्यक्त करते हैं, कीमत पूछते हैं, लेकिन यह आसानी से मिल नहीं रहा है। ध्यान रखें कि इस बाजार पर चीन की पैनी नजर है। वह मौके का फायदा उठाते हुए अपना दबदबा बनाए, उससे पहले ही भारत सरकार को बड़ा कदम उठाना चाहिए। रूसी गैस में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने से करोड़ों परिवारों को राहत मिलेगी। साथ ही देश तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से अग्रसर होगा।

ट्वीटर टॉक

किसानों के आशाओं की जमीन को सींच रही है मोदी सरकार की पीएम किसान सम्मान निधि योजना... तीसरी बार सरकार बनाते ही नरेंद्र मोदी ने सबसे पहले किसानों के हित में फैसला लिया और पीएम किसान की 17वीं किस्त जारी की जिससे देशभर के करोड़ों किसानों को लाभ हुआ।

सीपी जोशी

हल्दीघाटी विजय दिवस के अवसर पर मातृभूमि की स्वाधीनता की रक्षा के लिए आखिरी समय तक संघर्ष करने वाले मेवाड़ मुकुट महाराणा प्रताप जी एवं हल्दीघाटी युद्ध में अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले समस्त रणबांकुरों को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

-वसुंधरा राजे

आज मुख्यमंत्री कार्यालय में राजस्थान के आगामी वित्तीय वर्ष 2024-25 बजट के संबंध में उद्योग एवं सेवा क्षेत्रों के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व 'परामर्श बैठक' में भाग लिया। बैठक में औद्योगिक क्षेत्र में व्यापार, वाणिज्य को बढ़ावा देने के साथ विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की।

-दीया कुमारी

प्रेरक प्रसंग

सेवा-धारा का प्रवाह

सरपुर गांव में नदी किनारे एक महात्मा जी का आश्रम था। चारों ओर का वातावरण सुख शांति से भरा था। महात्मा जी से ज्ञान प्राप्ति हेतु कई शिष्य आते। एक दिन महात्मा जी ने शिष्यों से कुएं और नदी से जल लाने को कहा। कुछ ही देर में जल पात्र में जल लेकर लौटे। कुएं के जल लाने वालों से पूछा, 'क्या विशेषता रही?' शिष्य सोच में पड़ गए। यही प्रश्न नदी से जल लाने वालों से पूछा। पर कोई भी सही जवाब नहीं दे सका। सभी शिष्यों से महात्मा जी ने कहा, 'कुएं के जल से प्यास तभी बुझ सकती है जब कोई एक व्यक्ति किसी जल पात्र को रस्सी से बांधकर कुएं से पानी निकाल पाता है। लेकिन नदी का जल जो उसके किनारे पहुंचता है, सभी जीव-जंतुओं और प्राणियों की समान रूप से प्यास बुझाता है। इसलिए जीवन में नदी की तरह बनकर सबके लिए सेवा-भावी बनो।'

महत्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyan Kammani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor: Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.) Group Editor - Shreekanth Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law. Regn No. R.Nr. No.: TNHN / 2013 / 52520

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टेंडर एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी यह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उपायों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पुरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता। - दक्षिण भारत राष्ट्रमत

सामयिक

महिला सशक्तीकरण का माध्यम है योग

ललित गर्ग

मनुष्य के समुच्च युद्ध, महामारी, महंगाई, बेरोजगारी, प्रतिस्पर्धा के कारण जीवन का संकट खड़ा है। मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त हो रहा है। मानसिक संतुलन का अर्थ है विभिन्न परिस्थितियों में तालमेल स्थापित करना, जिसका सशक्त एवं प्रभावी माध्यम योग ही है। योग एक ऐसी तकनीक है, एक विज्ञान है जो हमारे शरीर, मन, विचार एवं आत्मा को स्वस्थ करती है। यह हमारे तनाव एवं क्रुद्धा को दूर करती है। जब हम योग करते हैं, क्षात्रों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, प्राणायाम और कसरत करते हैं तो यह सब हमारे शरीर और मन को भीतर से खुश और प्रफुल्लित करने के लिये प्रेरित करती है। योग ने सिर्फ शरीर को बल्कि मन को भी शांति और हृदयप्रिय करता है। योग के अभ्यास से शांतिपूर्ण मन से व्यक्ति को समाज कल्याण के लिए एक बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलती है। इस बार 10वीं बार अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2024 को पूरे विश्व में धूमधाम से मनाया जायेगा। इस साल योग दिवस की थीम महिलाओं पर आधारित 'महिला सशक्तीकरण के लिए योग' है। भारत ने योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई और योग के जरिए सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा दिया। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग लाभकारी है। यह शरीर को योगमूक रखता है और मन को शांति प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति से जुड़ी ये किया अब विश्वेश तक फैल चुकी है।

योग एक स्वस्थ और संतुलित जीवन शैली को प्रोत्साहित करता है। ध्यान व योग मानसिक शांति देता है, जिससे सकारात्मक विचार आते हैं और लोग स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। योग एक प्राचीन भारतीय परंपरा है, जो अब वैश्विक संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है। योग से परंपरादेश विदेश के योगी एक दूसरे से जुड़ते हैं और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देते हैं। इस वर्ष योग दिवस का लक्ष्य योग के माध्यम से महिलाओं के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देना है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि महिलाएं स्वस्थ और आत्मविश्वास से भरपूर हों और समाज में अग्रणी भूमिका निभा सकें। इस वर्ष महिलाओं को प्रभावित करने वाली विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों जैसे - मासिक धर्म की परेशानी, रजोनिवृत्ति के लक्षण और प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं पर शोध करने की योजना है। योग आत्म-जागरूकता और आत्म-स्वीकृति को बढ़ावा देता है, जो महिलाओं में आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ा सकता है, जिससे महिलाओं को अपने लक्ष्यों और आकांक्षाओं को पूरा करने की शक्ति मिलती है। योग के माध्यम से विश्व शांति, उन्नत व्यक्तित्व विकास, शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, गुरसा एवं तनाव कम करने जैसे लक्ष्यों को भी हासिल किया जायेगा।

पिछले दिनों कनाडा के ऑट्टेरियो यूनिवर्सिटी में हुए एक अध्ययन के अनुसार कुटा और तनाव के लगभग 64 प्रतिशत मरीजों ने माना कि उन्हें इस बात का अंदाज नहीं था कि उनकी खास बीमारी की वजह अंदर दबा गुरसा हो सकता है। गुरसे की वजह से कुछ मामलों में मरीजों ने अपने आपको नुकसान भी पहुंचाया। एबी कहते हैं, 'आपको पता ही नहीं होता कि



योग एवं ध्यान एक ऐसी विधा है जो हमें मीड से हटाकर स्वयं की श्रेष्ठताओं से पहचान कराती है। हममें स्वयं पुरुषार्थ करने का जज्बा जगाती है। स्वयं की कमियों से रु-ब-रु होने को प्रेरित करती है। स्वयं से स्वयं का साक्षात्कार कराती है। ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान हमारे भीतर से न मिले। भगवान महावीर का यह संदेश जन-जन के लिये सीख बने - 'पुरुष! तू स्वयं अपना भाग्यविधाता है।' औरों के सहारे मुकाम तक पहुंच भी गए तो क्या?

आपने अपने दिल में क्या-क्या भर रखा है। इसके लिए जरूरी है कि अपने आपको जानें। अगर कोई पुरानी बात आपको मथ रही है तो उसे जाने न दें। आप उस व्यक्ति को माफ कर दें और खुद को भी। इस तरह बिना बोझ के आप जिवंदगी में आगे बढ़ पाएंगे। मन की गंदगी को योग का माध्यम है योग पवित्र अंतःकरण ही वह दर्पण है जिसमें आत्मा का दर्शन, प्रकृति का प्रदर्शन और ब्रह्म का संदर्शन होता है। शुद्ध अंतःकरण में बुद्धि आकाशवत निर्मल और स्वच्छ रहती है, मन गंगा जैसा पवित्र रहता है, चित्त ऐसा स्थिर रहता है जैसे बिना वायु के अविचल दीपक की ज्योति और सम्पूर्ण चेतना भगवान में मिलने के लिए ऐसी बहती है जैसे

समुद्र में मिलने के लिए नदियां। जैसे शीशे में अपना चेहरा तभी दिखलायी पड़ता है जबकि शीशा साफ और स्थिर हो, इसी प्रकार शुद्ध अंतःकरण से ही परम ब्रह्म के दर्शन होते हैं। अभी कुछ दिन पहले ही एक बात समाचारपत्रों में पढ़ी कि कैसर क्यों होता है, इसके कई कारण हैं। एक कारण यह है कि जो लोग मस्तिष्क का सही उपयोग करना नहीं जानते उनके कैसर हो सकता है। मस्तिष्क विज्ञानी तो यह भी कहते हैं कि मस्तिष्क की शक्तियों का केवल चार या पांच प्रतिशत उपयोग आदमी करता है, शेष शक्तियां सुप्त पड़ी रहती हैं। चाहे कर्म का क्षेत्र हो या धर्म का क्षेत्र ही, दोनों में हम पिछड़े हुए हैं। सबसे पहले हमारी



नजरिया

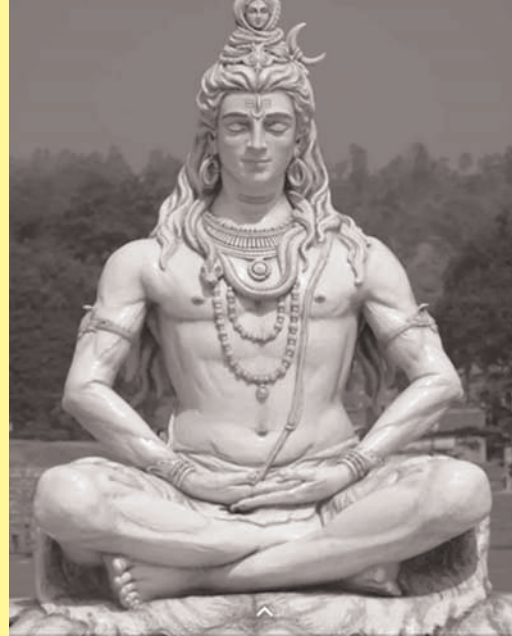
भारतीय परंपरा में शिव-तत्व भाव

स्वर्ण ज्योति

नो. 9443459660

यह भाव दरअसल उस तत्व की ओर इशारा करता है, जो स्थायी है, अनिर्मित है, इसलिए उसे मिटाया भी नहीं जा सकता। मनुस्मृति में उन्हें स्वयंभू कहा गया है। शिव पुराण कहता है कि शिव प्रकृति और पुरुष दोनों से परे हैं। गीता कहती है: 'उप दृष्टा नुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः'। शिव की कल्पना का एक दार्शनिक आधार है, जिसके बीच वैदिक युग में ही पड़ने लगे थे। ऋग्वेद में उनका नाम रुद्र है। अथर्ववेद में उन्हें महादेव कहा जाने लगा। शैतानेतर उपनिषद तक उनके ईश, महेश्वर, शिव और ईशान नाम हो गए। कश्मीर के शैव दर्शन में प्रकृति तत्व 'माया' नाम से जाना जाता है। श्रुति कहती है, 'मयं तु प्रकृतम विद्धि मयिनाम तु महेश्वरम्'। प्रकृति को माया और महेश्वर को माया या प्रकृति का स्वामी जानो। जैसा कि कई शिलालेखों से स्पष्ट है कि सभी देवताओं में शिव को सर्वोच्च माना जाता है। शिव को भारतीय अभिलेखीय शब्दावली में परिभाषित किया गया है। यह आमतौर पर संस्कृत, प्राकृत या द्रविड भाषाओं में लिखे गए प्राचीन शिलालेखों पर पाया जा सकता है।

बौद्ध धर्म, पाली, हिंदू धर्म, संस्कृत, जैन धर्म, प्राकृत, प्राचीन भारत का इतिहास, मराठी, हिंदी और जीव विज्ञान में शिव के अनेक अर्थ हैं। लिंग-पुराण के अनुसार शिव ब्रह्मांड के लिए वही है जो मिट्टी और कुम्हार धड़े के लिए हैं। नीलमत्तपुराण के अनुसार शिव एक ऐसे देवता को संदर्भित करता है जिसकी कभी प्राचीन कश्मीर में पूजा की जाती थी। 10 वीं शताब्दी के शैववाद को दर्शाते वाले विभिन्न उपपुराणों में से एक सौंपुराण के अनुसार, शिव उच्चतम सत्य को संदर्भित करता है: पांडिचेरी में डीरुपेस: तमिलनाडु में सिद्ध पंथ (शक्तिवाद) शरदतिलक के अनुसार, शिव निर्गुण और



सगुण दोनों हैं। वराहमिहिर द्वारा लिखित बृहत्संहिता (अध्याय 4) एक विश्वकोश संस्कृत कार्य जो मुख्य रूप से प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान पर आधारित है, के अनुसार, शिव समृद्धि को संदर्भित करता है। यहाँ में अपनी बात की दिशा बदलते हुए साहित्य में शिव तत्व की ओर मोड़ती हैं। साहित्य में सबसे पहले अश्वघोष के बुद्धचरित में शिव का उल्लेख है। रामायण, महाभारत भी शिवमय हैं। भर्तृहरि ने थोड़ा तिर्यक ढंग से शिव को याद किया है। भारत के नाट्यशास्त्र व

वाल्म्ययुग के कामसूत्र में भी शिव का नाम मिलता है। कालिदास की रघुवंश, विक्रमोर्वशीय तथा मालविकाग्निमित्र आदि कृतियों में जगह-जगह शिव स्तुति है। कुमारसंभव में शिव-वार्धनी परिणय, मदन दहन और स्कंद जन्म की कहानी विस्तृत ढंग से लिखी गई है।

मेघदूत में तो शिवोपासना विधि भी बताई गई है। दंडी के दशकुमार चरित व बाणभट्ट की कादंबरी में भी शिव हैं। यहाँ में अपनी बात को दक्षिण की ओर लिए चलती हैं। लिंगायत अथवा वीर शैव सिद्धांत को वसव ब्राह्मण से जोड़ा जाता है। डॉ. फ्लीट के अभिलेखों के अनुसार, लिंग साक्षात शिव है। लिंगायत मत भारतवर्ष के प्राचीनतम सनातन हिन्दू धर्म का एक हिस्सा है। इस मत के ज्यादातर अनुयायी दक्षिण भारत में हैं। यह मत भगवान शिव की स्तुति आराधना पर आधारित है। सन 1160 में बसवेश्वर के नेतृत्व में कल्याण में वीर शैव धर्म का उदय होता है। यह माना जाता है कि बसवेश्वर ने लिंगायत संप्रदाय की स्थापना की थी किंतु वास्तव में उन्होंने देश भर में प्रचलित शैव संप्रदायों से उपयोगी सिद्धांत लेकर उनका समन्वय कर एक नया नाम दिया लिंगायत संप्रदाय। इस मत के उपासक लिंगायत कहलाते हैं। लिंगायत शब्द कन्नड़ शब्द लिंगवत से व्युत्पन्न है। ये लोग मुख्यतः महात्मा बसवण्णा की शिक्षाओं के अनुयायी हैं। शैवमत का मूलरूप ऋग्वेद में रुद्र की आराधना में है। शिवलिंग उपासना का प्रारंभिक पुरातात्विक साक्ष्य हड़प्पा संस्कृति के अवशेषों से मिलता है।

दक्षिण हो या उत्तर, पूर्व हो या पश्चिम, चारों दिशाओं शिवमय हैं। शिव से संबंधित परंपरा हिंदू धर्म का एक प्रमुख हिस्सा है। जिस प्रकार इस ब्रह्माण्ड का ना कोई अंत है, न कोई छोर और न ही कोई शुरुआत, उसी प्रकार शिव अनादि है। सम्पूर्ण ब्रह्मांड शिव के अंदर समाया हुआ है। जब कुछ नहीं था तब भी शिव थे जब कुछ न होगा तब भी शिव ही होंगे। शिव भाव पवित्र और निश्चल है, शिव भारतीय दर्शन, कला, साहित्य और लोक परंपरा में सुगंध की तरह घुले हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विशेष

कब्ज के मर्ज से हैं परेशान? ये योगासन करेंगे 'समस्या' का समाधान

उन कारणों का पता लगाना चाहिए, जिनसे कब्ज पैदा होती है

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूर/दक्षिण भारत। आज कई परिवारों में कब्ज एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। प्रायः बुजुर्ग ही नहीं, किशोर और युवा भी यह शिकायत करते मिल जाते हैं कि सुबह उठकर पेट साफ नहीं होता। ऐसे में उन्हें दैनिक कार्यों से निवृत्त होने में काफी समय लग जाता है।

कब्ज के कई कारण हो सकते हैं, जैसे- देर से खाना, पचने में भारी पदार्थों का सेवन करना, शारीरिक श्रम न करना, पाचन के प्रतिकूल आदतें अपनाना, भोजन करते ही बैठ जाना या सो जाना, पर्याप्त फाइबर युक्त भोजन न करना, पर्याप्त पानी न पीना। कब्ज अपने साथ कई बीमारियां लेकर आती है, इसलिए समय रहते इससे निजात पाना जरूरी है। योगा जर्नल के अनुसार, हाल में हुए एक अध्ययन में पाया गया है कि जिन लोगों को कोविड हुआ था, उनमें वायरस का पता चलने के एक साल बाद तक कब्ज सहित जठरांत्र संबंधी समस्याओं का अनुभव होने की अधिक आशंका थी। जिन लोगों में वायरस के लक्षण अधिक गंभीर थे, उनमें आंतों की समस्याएं होने की आशंका अधिक थी।

सबसे पहले तो उन कारणों का पता लगाना चाहिए, जिनसे कब्ज पैदा होती है। अपनी दिनचर्या को प्रकृति के अनुकूल बनाएं। समय पर भोजन करें, अत्यधिक तले-भुने और पचने में भारी पदार्थों का सेवन न करें, भोजन करने के बाद थोड़ा टलें, तुरंत ही विश्राम न करें।

इसके साथ ही कुछ योगासन हैं, जिनका किसी कुशल प्रशिक्षक की देखरेख में अभ्यास किया जा सकता है। ये हैं - भुजंगासन, धनुरासन, अर्ध मत्स्येन्द्रासन, हलासन, मयूरासन, पवनमुक्तासन, बद्धकोणासन। ध्यान रखें कि यह समस्या रातोंरात दूर नहीं होती और सिर्फ योगासन करना पर्याप्त नहीं है। पावन तंत्र को कमजोर बनाने वाली चीजों और आदतों से दूर रहना जरूरी है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

योगाभ्यास करते समय अपनी क्षमता का ध्यान रखें

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूर/दक्षिण भारत। योगासन करने के कुछ खास नियम होते हैं। योगाभ्यास के दौरान उनका पालन करना जरूरी है। अगर योगासन ठीक तरह से न किया जाए तो नियमों का सही ढंग से पालन न किया जाए तो फायदे की जगह नुकसान भी हो सकता है।

- योग विशेषज्ञों के अनुसार, योगाभ्यास खाली पेट करना चाहिए।
- योगाभ्यास से पहले शौचादि से निवृत्त होना चाहिए।
- अपना भोजन सात्विक रखना चाहिए।
- योगाभ्यास करते समय, जब तक ऐसा

करना जरूरी न हो, सांस को रोककर न रखें। अन्यथा थककर आ सकते हैं।

- योगासन करने के लिए अच्छी चटाई या योगा मैट का उपयोग करें। कटी-फटी, मैली, फिसलन भरी और बहुत खुरदरी मैट का उपयोग न करें।
- अत्यधिक थकावट, बीमारी, जल्दबाजी, तीव्र तनाव, फ्रैक्चर, सर्जरी कराने या चोट लगे होने की स्थिति में योगाभ्यास न करें।
- भोजन करने के तुरंत बाद योग नहीं करना चाहिए। इसी तरह तुरंत बाद पानी या कोई अन्य पेय पदार्थ नहीं पीना चाहिए।
- योगाभ्यास करते समय अपनी क्षमता का ध्यान रखें। इससे ज्यादा अभ्यास करना कई समस्याएं पैदा कर सकता है।
- याद रखें कि योगाभ्यास से अच्छे परिणाम तुरंत ही नहीं मिल जाते। इसके लिए नियमित अभ्यास करना जरूरी है।
- योगाभ्यास करें तो ऐसे कपड़े पहनें, जो न तो बहुत ढीले हों और न बहुत कसे हुए हों। ऐसे कपड़े पहनना फायदेमंद होता है, जो योगाभ्यास में सहायक हों, उसमें बाधक न बनें।
- योग सत्र का समापन ध्यान, शांति पाठ आदि के साथ करना चाहिए।

रूस: बर्फीली धरती पर कैसे पहुंचा योग का प्रकाश?

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूर/दक्षिण भारत। दुनिया के कई देशों में योग के लोकप्रिय होने के बाद जहां लोगों ने इसे अपनाने में रुचि दिखाई, वहीं कुछ देशों में इसे रोकने की कोशिशें भी हुईं। हालांकि उनके ये प्रयास सफल नहीं हुए। देर-सबेर योग का प्रकाश वहां पहुंच गया।

रूस में योग का इतिहास कुछ ऐसा ही है। वहां साल 1910 के दशक से अभिनेता कॉन्स्टेंटिन स्टैनिरलावस्की ने साथी अभिनेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए इसका प्रदर्शन करना शुरू किया था। हालांकि इसकी शुरुआत तब से मानी जाती है, जब कैथरीन द ग्रेट ने 1788 में श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद प्रकाशित कराया था।

सोवियत संघ में योग पर प्रतिबंध लगाया गया था, क्योंकि इसके पीछे यह गलतफहमी थी कि इससे लोगों का झुकाव किसी खास विचारधारा की ओर हो जाएगा। वहीं, विदेशों में रहने वाले रूसी, जो योगाभ्यास करते हुए इसके फायदे महसूस कर चुके थे, ने साल 1920 से प्रचार-प्रसार शुरू कर दिया था।

इनमें इंद्रा देवी का नाम बहुत आदर से लिया जाता है, जिन्होंने रूसी क्रांति के दौरान रूस छोड़ दिया और भारत में तिरुमलाई कृष्णमाचार्य से योग सीखा और इसे अमेरिका में लोकप्रिय बनाया था।

रूस में नब्बे के दशक से योग का तेजी से प्रचार-प्रसार हुआ। इस दौरान योगाभ्यास के बड़े-बड़े स्टूडियो खुले, जिनमें सैकड़ों-हजारों की तादाद में रूसी लोग योग करने लगे। समय के साथ भारत और रूस के संबंध मधुर होने से रूसियों को योग के बारे में जानने के खूब अवसर मिले। अब तो अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर रूस के कई शहरों में लोग योगाभ्यास करते हैं।

हालांकि इसके बावजूद रूस में एक वर्ग ऐसा है, जो योग को कुछ संदेह की दृष्टि से देखता है और समय-समय पर इसके

खिलाफ बयान देता रहता है, लेकिन आमजन में योग की रवीकृति बढ़ रही है। मारको में स्थित भारतीय दूतावास द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, रूसी लोग योग के अनुशासन को अपने जीवन की स्थिति और शैली के अनुरूप बाल रहे हैं। कुछ लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रूस ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने के लिए भारत द्वारा शुरू किए गए संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव को सह-प्रायोजित करने का निर्णय लिया था।

रूस में योग के सबसे प्रसिद्ध अभ्यासी (पूर्व) प्रधानमंत्री दिमित्री मेदवदेव हैं, जिनके राष्ट्रपति रहते योग ने इस देश में अपार लोकप्रियता हासिल की। यहां 21 जून को देशभर में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। सबसे बड़ा आयोजन मारको के ऐतिहासिक सोकोलनिकी पार्क में होता है, जिसमें योगाभ्यास के लिए हजारों लोग आते हैं। रूस के अन्य शहरों में भी इस दिन को उत्साह के साथ मनाया जाता है। व्लादिवोस्तोक में एक हजार से ज्यादा लोग योगाभ्यास करते हैं। साइबेरियाई शहर नोवोसिबिर्स्क में योग प्रदर्शन के लिए पार्कों में विशेष क्षेत्र बनाए जाते हैं।



पुरानी कब्ज और गैस से मुक्ति दिलाएगा पवनमुक्तासन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूर/दक्षिण भारत। यूं तो पवनमुक्तासन के कई फायदे हैं, लेकिन यह उन लोगों के लिए खास फायदेमंद है, जिन्हें गैस और कब्ज आदि की समस्या रहती है। यह योगासन शरीर से वायु को निकाल देता है, इसलिए इसका नाम पवनमुक्तासन है। अंग्रेजी में इसे गैस रिलीज पोज कहा जाता है।

कैसे करें पवनमुक्तासन?

- सबसे पहले योगा मैट पर पीठ के बल लेट जाएं।
- अब धीरे-धीरे अपने घुटने को मोड़ें और तलवे को जमीन पर टिका लें।
- इसके बाद अपने दोनों हाथों से घुटने को ऊपर से पकड़ लें। फिर, गहरी सांस लें और घुटनों को सीने से लगाएं।
- इस दौरान सांस को रोक कर रखें।
- ध्यान रखें कि लंबी सांस अंदर रखते

घुटने को सीने से लगाना है। इस दौरान जांच को हाथों से पकड़ते हुए पेट पर हल्का दबाव होगा।

- लगभग पांच से 10 सेकंड तक इस स्थिति में रहें।
- अब घुटने को दोनों हाथों से मुक्त कर दें। उसके बाद सांस छोड़ते हुए पैर को सीधा करना है।
- इस तरह सामान्य स्थिति में लौट आने के बाद यही क्रिया दूसरे पांव के साथ करनी है।
- इस क्रिया को एक-एक कर दोनों पैरों से करते हुए चार-पांच बार दोहराएं।
- पवनमुक्तासन के फायदे
- यह ऐसा योगासन है, जिसका असर कुछ ही मिनटों में महसूस होना शुरू हो जाएगा।
- पवनमुक्तासन पीठ के साथ ही पेट की मांसपेशियों के लिए अच्छा होता है।
- इससे हाथों और पैरों की मांसपेशियां मजबूत होती हैं।
- इससे पुरानी कब्ज और गैस जैसी दिक्कतें

दूर होती हैं।

- पवनमुक्तासन रक्त परिसंचरण बढ़ाने में सहायक होता है।
- यह पेट की बड़ी हुई चर्बी दूर करने में प्रभावी है।
- इसका नियमित अभ्यास करने से पाचन तंत्र मजबूत होता है।
- इन सावधानियों का ध्यान रखना जरूरी
- जिन्हें गंभीर कमर दर्द हो, उन्हें इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए।
- जिनके घुटने में दर्द हो या सर्जरी कराई हो, वे इसे न करें।
- हर्निया, उच्च रक्तचाप, हृदयरोग जैसी समस्याओं में पवनमुक्तासन नहीं करना चाहिए।
- ध्यान रखें कि इस जानकारी का उद्देश्य योग के बारे में जागरूकता पैदा करना है। यह स्वास्थ्य संबंधी सलाह का विकल्प नहीं हो सकती। उचित सावधानियों का पालन करते हुए किसी कुशल योग प्रशिक्षक के दिशा-निर्देशों के अनुसार ही योगाभ्यास करना चाहिए।



सलमान खान ने शुरू की 'सिकंदर' की शूटिंग

मुंबई/एजेन्सी

बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान ने मोस्ट अवेटेड फिल्म 'सिकंदर' की शूटिंग शुरू कर दी है। इस कड़ी में उन्होंने फिल्म के सेट से एक तस्वीर शेयर की, जिसमें डायरेक्टर ए.आर. मुरगादास और प्रोड्यूसर साजिद नाडियाडवाला भी नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर में तीनों एक रकीन की तरह देख रहे हैं। लुक की बात करें तो 'दबंग' स्टार ने लाइट पर्पल कलर की टीशर्ट के साथ सनग्लासेस पहने हुए हैं। वहीं साजिद ने ब्लैक टीशर्ट के ऊपर रेड कलर की जैकेट पहनी है, जबकि मुरगादास ब्लू शर्ट में दिख रहे हैं। सलमान ने फोटो शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, 'सिकंदर' की टीम के साथ ईद 2025 का इंतजार

कर रहा हूँ।' अपनी इस पोस्ट में उन्होंने साजिद नाडियाडवाला, ए.आर. मुरगादास और रश्मिका मंदाना को टैग किया है। रिपोर्ट के अनुसार, मंगलवार को फिल्म के लिए लुक टेस्ट और फोटो शूट किया गया।

इस साल ईद के मौके पर यानी 11 अप्रैल को सलमान ने सोशल मीडिया के जरिए इस फिल्म की अनाउंसमेंट की थी। उन्होंने एक पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, 'इस ईद 'बड़े मियां छोटे मियां' और 'मैदान' देखो और अगली ईद पर 'सिकंदर' से आकर मिलो.. आप सभी को ईद मुबारका।' फिल्म के डिटेल्स से अभी पर्दा नहीं उठाया गया है। पिछले साल सलमान को पहली बार 'किरी का भाई किरी की जान' में देखा गया था, जो

फरहाद सामजी द्वारा निर्देशित एक एक्शन कॉमेडी थी। यह फिल्म 2014 की तमिल फिल्म 'वीरम' का रीमेक है। इसमें पूजा हेग्ड़े, वेंकटेश, शहनाज गिल और राघव जुवाल भी हैं। इसके बाद उन्हें मनीष शर्मा द्वारा निर्देशित जासूसी एक्शन थ्रिलर 'टाइगर 3' में देखा गया। इसमें कैटरिना कैफ और इमरान हाशमी लीड रोल में हैं। यह फिल्म 'एक था टाइगर' और 'टाइगर जिंदा है' का सीकवल है। 'सिकंदर' में रश्मिका मंदाना, सलमान खान के अपोजिट नजर आएंगी। फिल्म का निर्माण साजिद नाडियाडवाला कर रहे हैं। इससे पहले वह सलमान के साथ 'जुडवा', 'मुझे शादी करोगी' और 'किंग' समेत कई फिल्मों में काम कर चुके हैं।

तिब्बती लोगों को अपने धर्म का स्वतंत्र रूप से पालन करने में सक्षम होना चाहिए : माइकल मैककॉल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

धर्म शाला / शिमला। अमेरिकी संसद की विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष माइकल मैककॉल ने बुधवार को कहा कि तिब्बती लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार है। उन्होंने जोर देकर यह भी कहा कि उनकी (तिब्बतियों की) एक अनूठी संस्कृति और धर्म हैं और उन्हें अपने धर्म का स्वतंत्र रूप से पालन करने में सक्षम होना चाहिए।

धर्मशाला में तिब्बतियों के धार्मिक गुरु दलाई लामा से मुलाकात करने वाले अमेरिकी सांसदों के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे मैककॉल ने कहा कि यही कारण है कि 'हम आज 'चीन की कम्युनिस्ट पार्टी' (सीसीपी) की अवहेलना करते हुए यहां पहुंचे हैं।' उन्होंने धर्मशाला स्थित केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) द्वारा आयोजित एक समारोह में कहा कि सीसीपी द्वारा हिंसा किये जाने और दलाई लामा को घर से जबरन निकाले जाने के बावजूद यह (तिब्बती धर्मगुरु) सहिष्णुता, शांति और क्षमा का उपदेश देना जारी रखे हुए हैं।

मैककॉल ने जोर देकर कहा कि लोकतंत्र में लोग स्वतंत्र होते हैं, जबकि वे (तिब्बती) निरंकुश शासन के तहत गुलाम हैं।

मैककॉल ने कहा, 'तिब्बती लोगों का एक अलग धर्म, संस्कृति और ऐतिहासिक पहचान है तथा



उन्होंने अपने भविष्य के बारे में अपनी राय रखने का अधिकार होना चाहिए। आपको अपने धर्म का स्वतंत्र रूप से पालन करने में सक्षम होना चाहिए और यही कारण है कि हम आज सीसीपी की चेतावनी की अवहेलना करते हुए यहां आए हैं।' उन्होंने कहा, 'हमारे प्रतिनिधिमंडल को सीसीपी से एक पत्र मिला, जिसमें हमें यहां न आने की चेतावनी दी गई थी। उन्होंने अपना झूठा दावा दोहराया कि तिब्बत 13वीं शताब्दी से चीन का हिस्सा है, लेकिन सीसीपी की चेतावनियों से प्रभावित हुए बिना हम आज यहां हैं।' उन्होंने कहा कि दलाई लामा, तिब्बत के लोग और अमेरिका, सभी जानते हैं कि तिब्बत, चीन का हिस्सा कतई नहीं है।

मैककॉल ने कहा कि इस यात्रा का समय इससे बेहतर नहीं हो सकता, क्योंकि पिछले साहस प्रतिनिधि सभा और अमेरिकी कांग्रेस ने 'तिब्बत (विवाद) समाधान' विधेयक पारित किया था, जिसमें स्पष्ट किया गया है कि तिब्बत की अपनी अनूठी संस्कृति, भाषा और धर्म हैं तथा उसे आत्मनिर्णय का अधिकार है।

'फैशन के साथ चलना थकाऊ' हो सकता है : मंजरी मिश्रा

मुंबई/एजेन्सी

एक्ट्रेस मंजरी मिश्रा ने कहा कि फैशन के रुझान के साथ चलना थका देने वाला हो सकता है। गुजराती फिल्म 'फुलेकू' और बॉलीवुड फिल्म 'रॉकेट गैंग' में अपने काम के लिए मशहूर एक्ट्रेस ने कहा कि मेरे लिए फैशन आत्म-अभिव्यक्ति का एक रूप है, जो कपड़ों, एसेसरीज और शैली के माध्यम से व्यक्तित्व और सांस्कृतिक प्रभावों को दिखाने का एक तरीका है। मंजरी ने कहा कि उनके कपड़े बेहद आरामदायक होते हैं, जो उन्हें सहज और आत्मविश्वासी महसूस कराते हैं। उनका मानना है कि फैशन के रुझानों के साथ बने रहना वास्तव में थका देने वाला हो सकता है। एक्ट्रेस ने कहा कि कलाकारों को कुछ हद तक वर्तमान से जुड़े रहने के साथ सार्वजनिक कार्यक्रमों और रेड कार्पेट इवेंट के लिए दबाव महसूस हो सकता है। मंजरी का मानना है कि कुछ लोग कभी-कभी ट्रेंड के मामले में हद से आगे निकल जाते हैं। कई लोग आराम से ज्यादा स्टाइल को प्राथमिकता देते हैं। क्या

पहनना है, इसके लिए आवश्यक है कि किसी किरदार को अलग फैशन सेंस के साथ दिखाते समय कलाकार को अपनी भूमिका की प्रामाणिकता बनाए रखने और प्रशंसकों के बीच भ्रम से बचने के लिए सार्वजनिक रूप से किरदार के अनुरूप कपड़ों का चुनाव करना चाहिए।





अग्रवाल विद्यालय में अक्षराभ्यास कार्यक्रम सम्पन्न

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। अग्रवाल विद्यालय बालोद्यान (केजी) के विद्यार्थियों के लिए अक्षराभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या सी. विजयलक्ष्मी ने सभी का स्वागत करते हुए अभिभावकों को शुभ संस्कारों के साथ विद्यार्थियों का महत्व समझाया एवं विद्यार्थियों के उज्वल भविष्य की कामना की। हिंदी विभागाध्यक्षा अंशु अग्रवाल ने हिंदी में, तमिल अध्यापिका वसंती ने तमिल एवं अंग्रेजी शिक्षिका श्रीजा ने अंग्रेजी में भारतीय संस्कृति के पावन आयोजन अक्षराभ्यास के महत्व से अवगत कराया। मनोवाचक के साथ गणेश वंदना, सरस्वती वंदना के साथ - साथ ओम ध्वनि का उच्चारण हुआ।



माँ बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है और ओम की ध्वनि सृष्टि का प्रथम स्वर, पत्तों से बनी थाली में अक्षत लक्ष्मी स्वरूप है। इस प्रकार इस अक्षराभ्यास के आयोजन में एलकेजी एवं प्रीकेजी के विद्यार्थियों को अपनी माता की गोद में बैठकर धान से भरे पात्र में उनकी सूर्य उगली से सृष्टि के प्रथम स्वर ओम की तीन बार रचना करवाई गई और माँ लक्ष्मी तथा माँ सरस्वती का आशीर्वाद पाकर विद्यार्थियों को सचिव एवं पत्राचारक मुरारिलाल सोथालिया, कोषाध्यक्ष सावरमल खेमका, केजी अध्याक्षा शालिनी अग्रवाल, समिति सदस्य मनोहर लाल बगडिया, मुकेश गुप्ता, शारदा अग्रवाल, वरिष्ठ उपप्रधानाचार्या रघुदेव, उप प्रधानाचार्यामाहेश्वरी मारन एवं अन्य शिक्षक - शिक्षिकाओं उपस्थित थे।



मद्रुरै के भारतीय मानक ब्यूरो में आयोजित हुआ दो दिवसीय प्रशिक्षण सत्र

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मद्रुरै। शहर के भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने एक होटल में मद्रुरै बीआईएस मानक क्लब के विज्ञान शिक्षकों के लिए मानकों के माध्यम से विज्ञान सीखने पर दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रूप से मद्रुरै और थेनी जिलों में स्थित विभिन्न सरकारी स्कूलों के 65 विज्ञान शिक्षकों ने

भाग लिया। बीआईएस, मद्रुरै के वरिष्ठ निदेशक और प्रमुख एसडी दयानंद ने स्वागत भाषण और कार्यक्रम के उद्देश्य प्रस्तुत किए। उन्होंने बीआईएस मानक क्लब के विज्ञान शिक्षकों के साथ बातचीत की और हमारे दैनिक जीवन में मानकीकरण और गुणवत्ता को समझने के महत्व के बारे में बताया। मुख्य शैक्षिक अधिकारी के. कार्तिका ने उद्घाटन भाषण दिया और शिक्षकों से छात्रों के लिए इसका अधिकतम लाभ सुनिश्चित करने के लिए कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने का

आग्रह किया। उन्होंने यह भी बताया कि बीआईएस ने मानकों के माध्यम से विज्ञान सीखने की पहल के तहत 52 पाठ योजनाएँ तैयार की हैं, शिक्षकों से इन योजनाओं से खुद को परिचित करने और अपने शिक्षण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को शामिल करने का आग्रह किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई, जिनमें बीआईएस की मुख्य गतिविधियाँ, बीआईएस केयर ऐप की विशेषताएँ, मानकों के लिए प्रचार गतिविधियाँ, मानक क्लबों

की उत्पत्ति और गतिविधियों के संबंध में शिक्षाविदों के साथ जुड़ाव, एक अभिविचार फिल्म, गुणवत्ता और मानकों के संबंध में दैनिक जीवन में विज्ञान का महत्व, गुणवत्ता और मानकों को बढ़ावा देने में विज्ञान शिक्षकों की भूमिका और कार्टिक सोडा, गैस स्टोव, गीजर और प्रेशर कुकर जैसे उत्पादों पर केंद्रित पाठ योजनाएँ शामिल थीं। दूसरे दिन, प्रतिभागियों ने उत्पादों के परीक्षण प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक सिद्धांतों को दर्शाने वाले

प्रदर्शनों के लिए मद्रुरै में मेसर्स सीआईपीईटी प्रयोगशाला का दौरा किया। प्रयोगशाला के दौर के बाद, रोजमर्रा के उत्पादों पर लागू वैज्ञानिक नियमों और सिद्धांतों की पहचान करने पर केंद्रित एक समूह गतिविधि हुई। प्रतिभागियों ने प्लास्टिक फीडिंग बोतल, सादा कॉपियर पेपर, आयोडीन युक्त नमक, पीने योग्य पानी की बोतल आदि जैसे विभिन्न आम तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले उत्पादों पर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।



एजी जैन स्कूल में कराटे प्रशिक्षण का आयोजन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। स्थानीय एजी जैन हायर सेकेंडरी स्कूल के प्रांगण में कराटे प्रशिक्षण एक दक्ष प्रशिक्षक की देख रेख में प्रारंभ हुआ। प्रशिक्षण सत्र का लक्ष्य पूर्ण

शारीरिक और मानसिक विकास की दिशा में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना है। समर्पण, नियमित अभ्यास और सही मार्गदर्शन के साथ विद्यार्थी इस कला में निपुणता हासिल कर सकते हैं। कराटे का उद्देश्य केवल आत्मरक्षा नहीं, बल्कि एक अनुशासित और

संतुलित जीवन जीना भी है। इस अवसर पर विद्यालय के सचिव दलजीत सिंह ढडा, विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्य गौतम बोहरा, विद्यालय की कार्यवाहक प्रधानाचार्या डॉ. जयश्री सहित अनेक शिक्षकगण एवं विद्यालय के विद्यार्थीगण उपस्थित थे।

डी. जयशंकर ने तमिलनाडु के प्रधान महालेखाकार का पदभार संभाला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। आईएस डी. जयशंकर ने तमिलनाडु के प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-ख) के रूप में कार्यभार संभाल लिया है। जयशंकर ने वर्ष 1996 में आईसीएआर में वैज्ञानिक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया और सितंबर 2000 में भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग में शामिल हो गए।



उन्होंने पिछले पचीस वर्षों से भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक और भारत सरकार के तहत विभिन्न पदों पर कार्य किया है, जिसमें रक्षा क्षेत्र, रक्षा उत्पादन क्षेत्र, राज्य वित्त, व्यव और राजस्व, स्थानीय निकाय और स्वायत्त निकाय, राज्य सार्वजनिक क्षेत्र की



दक्षिण रेलवे की 174 वीं जोलिक बैठक में गृह पत्रिका का हुआ विमोचन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। दक्षिण रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (जोलिक) की 174 वीं बैठक बुधवार को दक्षिण रेलवे मुख्यालय में दक्षिण रेलवे के अपर महाप्रबंधक कौशल किशोर की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

अपर महाप्रबंधक ने गृह पत्रिका 'दक्षिण ध्वनि' का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रसिद्ध गति दिनकर-भारतीदासन पर सहायक साहित्य के रूप में एक द्विभाषी प्रकाशन (तमिल-हिंदी) का भी विमोचन किया गया। सहायक महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष कौशल किशोर ने जोलिक ने अपने मुख्य भाषण में कर्मचारियों से दैनिक कार्य में

राजभाषा का प्रशिक्षण लेने का आग्रह किया। कार्यक्रम के दौरान प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी पी. सुरेश, उप महाप्रबंधक, राजभाषा सहदेवसिंह ने अपने विचार रखे तथा विभाग की कार्यान्वयन गतिविधियों पर प्रकाश डाला। यह जानकारी वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी ओम प्रकाश ने दी।



हिन्दू मुन्नी संस्था के अध्यक्ष ने जैन साध्वी से लिया आशीर्वाद

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोयंबतूर। शहर के आरजी स्ट्रीट स्थित राजस्थान जैन क्षेत्रांतर मूर्तिपूजक संघ द्वारा संचालित बड़ा सुपाईनाथ मंदिर में साध्वीश्री संस्कारनिधीश्री के दर्शनार्थ हिन्दू मुन्नी संस्था के प्रवेश अध्यक्ष अर्जुन संपत पहुंचे। अर्जुन ने साध्वीश्री ने

दर्शन कर आशीर्वाद लिया तथा मंदिर में पूजा की। मंदिर के अध्यक्ष गुलाबचंद मेहता ने उनका स्वागत किया। साध्वीश्री संस्कारनिधीश्री से मुलाकात कर जैन धर्म और सनातन धर्म के इतिहास की चर्चा की। साध्वीश्री ने भारतीय संस्कृति पर ज्यादा काम करने का आग्रह किया और कहा कि हम सभी का कर्तव्य है कि हम भारतीय संस्कृति

को बढ़ावा दें। अर्जुन संपत ने तमिल साहित्य में जैनो का योगदान पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में संघ के अध्यक्ष गुलाबचंद मेहता, सचिव गौतम बाफना, कोषाध्यक्ष तेजराज राठौड़, सह कोषाध्यक्ष दिनेश राठौड़, नितेश जैन, किशोर जैन, कुलदीप मेहता, हेमंत बाफना, शीतल मेहता, अमित जैन, दिनेश गोलेछा और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

साध्वीश्री सिद्धप्रभा पहुंची हनुमंतनगर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। साध्वीश्री सिद्धप्रभाजी बुधवार को चामराजपेट से विहार कर हनुमंतनगर सभा भवन पहुंची जहां 25 जून तक उनका प्रवास होगा। तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला

मंडल इस प्रयास काल में निरंतर आध्यत्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करेगी। रास्ते की सेवा का लाभ लेयुप अध्यक्ष अंकुश बैद, धर्मेश कोठारी, उपाध्यक्ष महावीर कटारिया, सहमंत्री देवेन्द्र आंचलिया और सुमित चिंडालिया, कोषाध्यक्ष गौतम चावत व विहार सेवा प्रभारी रश्मि लोढा ने लिया।

पाप से बचें, धर्म से जुड़ें, पुण्य का अर्जन करें : साध्वीश्री दर्शनप्रभा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के महालक्ष्मी लेआउट में स्थित मातृकृपा निवास पर विराजित श्रवण संघीय उपप्रवर्तिनी डॉ. दर्शनप्रभाजी व डॉ. समुद्रिशीजी का चेतनप्रकाश झारमुथा, विनोद भंसाली, नीलेश लोढा आदि ने गर्मजोशी से स्वागत किया। इस मौके पर साध्वीश्री ने

कहा कि इस संसार में हमें पाप से बचना चाहिए। जीवन में छोटे छोटे पाप व गलत कामों से बचना चाहिए और धर्म व ध्यान में मन लगाना चाहिए। पाप से दूरी बनाने व धर्म से नजदीकी बढ़ाने से पुण्य का अर्जन होगा और मोक्ष की प्राप्ति होगी। इस मौके पर धनंजय गुरुजी एवं विनोद भंसाली ने अपने भाव व्यक्त किए। प्रवचन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पुरुष व महिला उपस्थित थे।



तेरापंथ सभा यशवंतपुर की नई कार्यकारिणी समिति ने किया दायित्व ग्रहण

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के तेरापंथी सभा यशवंतपुर का वर्ष 2024-26 का दायित्व ग्रहण समारोह साध्वीश्री उदितयशजी के सान्निध्य में अहम भवन विजयनगर में आयोजित हुआ। साध्वीश्रीजी उदितयशजी ने कहा कि दायित्व ग्रहण करने से पहले श्रावक को दायित्व का बोध होना चाहिए। पद से मुक्त होने पर भी व्यक्ति कार्यकर्ता रहता है इसलिए उसका कार्यकाल कभी समाप्त नहीं होता। सभाओं का दायित्व होता है कि वह मूल को छोड़े नहीं और तत्वज्ञान व पचीस बोल हर श्रावक सीखे ऐसा प्रयास करना चाहिए। समय समय पर

महासभा से समागत प्रकाश लोढा, सभा प्रभारी नवनीत मुथा, गांधी नगर ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश बाबेल, मदनलाल बरडिया, गांधीनगर सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, विजयनगर उपाध्यक्ष भंवरलाल माण्डोत, तेषुप अध्यक्ष जिगर मारु, महिला मंडल अध्यक्ष मीनाक्षी दक ने शुभकामनाएं दी। प्रेक्षा संगीत सुध्या ने गीतिका प्रस्तुत की। मंत्री अनिल दक ने धन्यवाद दिया। संचालन महावीर ओरतवाल ने किया। विजयनगर अध्यक्ष मंगलचंद कोचर, टी दासरहल्ली अध्यक्ष भगवतीलाल माण्डोत, राजाजीनगर अध्यक्ष अंशोक चौधरी, हनुमंतनगर के अध्यक्ष तेजमल सिधवी आदि संस्थाओं के अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे।